# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मेरठ प्रान्त

क्रमांक-1

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद - 2075, युगाब्द 5120

जुलाई, अगस्त, सितम्बर 2018

# शाखा पुस्तिका

नाम _____

शाखा _____ दायित्व _____

खण्ड/नगर _____ जिला _____

# स्मरणीय दिवस

**जुलाई - 2018**

- 1, 1574 ई. तृतीय गुरु अमरदास पुण्यतिथि (आ.शु.पू.सं. 1631)
- 1, 1857 ई. नाना साहब पेशवा, राज्याभिषेक
- 1, 1909 ई. खुदीराम बोस द्वारा धूर्त और क्रूर विलियम कर्जन वाइली की हत्या।
- 4, 1943 ई. आजाद हिन्द सेना स्थापना दिवस। प्रधान सेनापति बने सुभाष चन्द्र बोस।
- 4, 1897 ई. अल्लूरी सीताराम राजू जयन्ती।
- 4, 1902 ई. स्वामी विवेकानन्द महानिर्वाण दिवस।
- 5, 2007 ई. अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख मा. अधीश कुमार जी पुण्यतिथि।
- 6, 1901 ई. डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयन्ती।
- 6, 1905 ई. राष्ट्र सेविका समिति संस्थापिका श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी) जयन्ती।
- 7, 1657 ई. अष्टम गुरु हरिकृष्ण जी जयन्ती।
- 8, 1675 ई. नवम गुरु तेग बहादुर जी द्वारा गोविन्द राय (गोविन्द सिंह जी) अगले गुरु घोषित।
- 8, 1999 ई. टाइगर हिल विजय स्मृति दिवस।
- 9, 1921 ई. श्रीराम चन्द्र (रामभाऊ) म्हाल्गी जयन्ती
- 13, 1660 ई. बाजी प्रभु देशपाण्डे बलिदान दिवस।
- 14, 2003 ई. संघ के चतुर्थ सरसंघचालक प.पू. रज्जू भैया पुण्यतिथि (श्रा.कृ 1 वि.सं. 2060)

# स्मरणीय दिवस

## जुलाई - 2018

- 20, 1965 ई. बटुकेश्वर दत्त पुण्यतिथि।
- 20, 1920 ई. माँ शारदा निर्वाण (समाधि) दिवस।
- 23, 1856 ई. लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयन्ती।
- 23, 1906 ई. चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती।
- 26, 1972 ई. मान. बालासाहेब आप्टे पुण्यतिथि।
- 26, 1999 ई. कारगिल विजय दिवस।
- 29, 1891ई. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर निर्वाण दिवस।

## अगस्त - 2018

- 1,1920 ई. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक पुण्यतिथि।
- 4, 1522 ई. महाराजा उदय सिंह की जयन्ती।
- 7, 1941 ई. रवीन्द्र नाथ ठाकुर पुण्यतिथि।
- 8, 1509 ई. श्रीकृष्ण देवराय राज्याभिषेक दिवस (विजयनगर साम्राज्य)।
- 9, 1925 ई. काकोरी काण्ड।
- 9, 1942 ई. अगस्त क्रांति (भारत छोड़ो आंदोलन) दिवस।
- 10, 1860 ई. संगीत सम्राट विष्णु नारायण भातखण्डे जयन्ती।
- 11, 1908 ई. खुदीराम बोस बलिदान (फाँसी) दिवस।
- 12, 1919 ई. डॉ. विक्रम साराभाई जयन्ती।
- 13, 1638 ई. वीर दुर्गादास राठौर जयन्ती।
- 13, 1795 ई. देवी अहिल्याबाई होल्कर जयन्ती।
- 14, 1947 ई. भारत विभाजन, अखण्ड भारत स्मृति संकल्प, सिन्धु स्मृति दिवस।

- 15, 1947 ई. स्वतंत्रता दिवस
- 15, 1872 ई. योगीराज महर्षि अरविन्द जयन्ती।
- 16, 1831 ई. रानी अवन्तीबाई लोधी जयन्ती।
- 30, 1936 ई. मदाम भीखाजी कामा (मैडम कामा) पुण्यतिथि।
- 17, 1909 ई. मदनलाल धींगड़ा बलिदान दिवस (लंदन में फाँसी)।
- 18, 1700 ई. पेशवा बाजीराव जयन्ती।
- 20, 1992 ई. मान. यादवराव जोशी पुण्यतिथि।
- 22, 1982 ई. एकनाथ रानाडे पुण्यतिथि।
- 23, 2008 ई. स्वामी लक्ष्मणानन्द बलिदान दिवस।
- 25, 1945 ई. रास बिहारी बोस पुण्यतिथि।
- 25, 1303 ई. रानी पद्मिनी जौहर (प्रथम साका) दिवस।
- 26, 2018 ई. रक्षाबन्धन उत्सव।
- 28, 1903 ई. मान. बाबा साहेब आप्टे जयन्ती।
- 29, 1905 ई. मेजर ध्यानचन्द (हाकी के जादूगर) जयंती।
- 30, 1888 ई. कन्हाई लाल दत्त जयन्ती।

## सितम्बर मास

- 1, 1581 ई. श्री गुरु रामदास 'जेठा' पुण्यतिथि (भाद्रपद शु.2)
- 3, 1914 ई. मा. यादवराव जोशी जयन्ती।
- 4, 1669 ई. काशी विश्वनाथ मंदिर विध्वंस (औरंगजेब द्वारा)।
- 5, 1888 ई. डॉ. राधाकृष्णन जयन्ती (शिक्षक दिवस)।
- 7, 1539 ई. गुरु नानक देव पुण्यतिथि।
- 10, 1915 ई. बाघा जतिन बलिदान दिवस।

- 11, 1893 ई. विश्व विजय दिवस (स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो में उद्‌बोधन)।
- 12, 1991 ई. स्वदेशी दिवस (स्वदेशी जागरण मंच)।
- 13, 1929 ई. यतीन्द्रनाथ दास बलिदान दिवस।
- 15, 1861 ई. एम. विश्वैश्वरैय्या जयन्ती।
- 15, 1915 ई. जतिन मुखर्जी बलिदान दिवस।
- 17, 1892 ई. हनुमान प्रसाद पोद्दार जयन्ती
- 17, 2018 ई. भगवान विश्वकर्मा पूजन (मजदूर दिवस, भारतीय मजदूर संघ, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी)।
- 19, 1726 ई. खण्डोबल्लाल पुण्यतिथि
- 19, 1936 ई. प्रसिद्ध संगीतज्ञ पं. भातखण्डे पुण्यतिथि।
- 20, 1928 ई. नारायण गुरु पुण्यतिथि।
- 21, 2003 ई. मोरोपंत पिंगले पुण्यतिथि।
- 21, 1725 ई. अहिल्याबाई होल्कर जयन्ती।
- 23, 1908 ई. रामधारी सिंह दिनकर जयन्ती।
- 24, 1861 ई. भीका जी कामा (मैडम कामा) जयन्ती।
- 23, 2018 ई. गणेश विसर्जन।
- 24, 2018 ई. पितृ पक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ।
- 25, 1916 ई. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती।
- 26, 1820 ई. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जयन्ती।
- 27, 1833 ई. राजाराम मोहन राय पुण्यतिथि।
- 28, 1907 ई. सरदार भगत सिंह जयन्ती।
- 30, 1978 ई. मान. माधवराव मुले पुण्यतिथि

# अपनों से अपनी बात

आत्मीय बन्धुवर,

सादर जय श्रीराम।

ईश कृपा से सभी बन्धु स्वस्थ एवं सानन्द होकर शाखा विस्तार में लगे होंगे। ऐसी आशा है। संघ शिक्षा वर्गों के पश्चात् जुलाई मास से अपना नया सत्र नवीन योजनाओं, रचनाओं एवं नये उत्साह के साथ आरम्भ होता है। आगामी कार्यक्रम निम्नवत हैं-

**जुलाई माह**

- 7 से 14 जुलाई शाखा दृढ़ीकरण हेतु विस्तारक सप्ताह।
- 8 जुलाई ( माह का दूसरा रविवार) शाखा टोली अभ्यास वर्ग नगर/खंड
- के अनुसार।
- 14 जुलाई अधिकतम संख्या दिवस।
- 15,16,17 जुलाई प्रान्त प्रचारक बैठक सोमनाथ गुजरात ।
- 15 से 29 जुलाई श्री गुरुपूजन उत्सव (27 जुलाई गुरु पूर्णिमा)।
- 21, 22 जुलाई अखिल भारतीय बैठक (शारीरिक व बौद्धिक विभाग) रायपुर।

**अगस्त माह**

- 5 अगस्त प्रान्त व्यवस्था बैठक (गुरु पूजन उत्सव का समापन)
- 9 अगस्त शिवरात्रि।
- 14 अगस्त अखंड भारत संकल्प दिवस शाखा अनुसार करना है
- 18 सायं से 19 दो. तक शाखा टोली पर्यन्त अभ्यास वर्ग जिला स्तर पर
- 26 अगस्त रक्षा बंधन उत्सव शाखा अनुसार करना है।

**सितम्बर माह**

- 1 से 2 सितम्बर सायं तक प्राथमिक शिक्षा वर्ग सञ्चालन टोली बैठक (विभाग स्तर पर)
- 3 से 10 सितम्बर प्रान्त प्रचारक जी का विभागशः प्रवास 20 से 30 वर्ष के स्वयंसेवक एवं गतिविधि प्रमुखों हेतु ।

- 5 से 15 सितम्बर नवीन विस्तारक वर्ग शिकारपुर।
- 9 सितम्बर (माह का दूसरा रविवार) शाखा टोली अभ्यास वर्ग नगर/ खंड के अनुसार।
- 15,16 सितम्बर गण शिक्षक वर्ग (प्राथमिक शिक्षा वर्ग)
- 22,23 सितम्बर बौद्धिक विभाग की कार्यशाला, मेरठ
- 23-30 सितम्बर शाखा दृढीकरण सप्ताह ।

अपनी योजना, रचना और उनका क्रियान्वयन प्रभावी एवं परिणामकारी रहे, इस निमित्त कुछ बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना यथेष्ट रहेगा

❖ त्रि-वर्षीय कार्य विस्तार योजनान्तर्गत खण्ड/नगर केन्द्रों तक शाखा सुदृढ़ीकरण और मण्डलों/बस्तियों की ओर कार्य विस्तार, संगठन की अपेक्षाओं का विषय है, कार्य विस्तार हेतु निर्दिष्ट सभी बिन्दुओं में से एक प्रान्त के सभी राजमार्गों और राज्य मार्गों पर, बाजार केन्द्रों के रूप में विकसित सघन बस्तियों को प्राथमिकता देकर उनमें कार्य स्थापित करना, खोज कर दिखने वाला कार्य नहीं, एक झलक में राह चलते पथिक को दिखने वाला- ऐसा कार्य स्थापित करना इस वर्ष की प्राथमिकता है- ऐसा मानकर कार्य योजना बनाये।

❖ शाखा स्थायी, प्रभावी और परिणामकारी हो, इसके लिये अभी से शाखा टोली गठित कर इस टोली की साप्ताहिक बैठक भी निश्चित करना योग्य रहेगा, शाखा का अन्तिम लक्ष्य व्यक्ति परिवर्तन के द्वारा समाज परिवर्तन करना है, शाखा के प्रभाव को नापने का मापदण्ड भी यही है। शाखा के सभी कार्यकलाप तदनुरूप हो- ऐसी अपेक्षा है।

❖ प्रत्येक शाखा की अपनी शाखा पुस्तिका हो, उसमें शाखा के स्वयंसेवकों की सूची हो, उपस्थिति का निर्देशन भी उसी में हो, वर्ष भर के सभी विशिष्ट कार्यों का और अधिकारियों के प्रवास का उसमें अंकन हो- ऐसी अपेक्षा विगत कई वर्षों से की जा रही है। संघ की कार्य प्रणाली में अपेक्षायें दीर्घ काल तक लम्बित नहीं रहती। पूरा विश्वास है कि आपने भी अपेक्षाओं को लम्बित नहीं रखा होगा।

❖ प्रत्येक कार्य विभाग के पास कार्यकर्ताओं की प्रचुरता रहे। इस निमित्त प्रत्येक कार्य विभाग/आयाम प्रमुख अपनी टोली की रचना-योजना

(शारीरिक टोली, बौद्धिक टोली आदि) जुलाई मास में ही अवश्य कर लेंगे तो कार्य संचालन प्रभावी भी होगा और सुविधाजनक भी।

- नगर/खण्ड अभ्यास वर्ग एवं बैठकें प्रारम्भ करने के लिये अपेक्षित कार्यकर्ताओं की सूची उनकी उपस्थिति और अभ्यास वर्ग प्रमुख सुनिश्चित करना यथेष्ट रहेगा। विभिन्न प्रवास और प्रवास में वांछित विषयों जैसे विद्यार्थी शाखा टोली, शाखा पालक, औसत उपस्थिति, शाखा के शारीरिक व बौद्धिक कार्यक्रम, अभ्यास वर्ग, बैठकें आदि पर ध्यान केन्द्रित कर क्रियान्वयन करना यथेष्ट होगा।
- शाखा के वार्षिक कार्यक्रम जैसे अधिकतम उपस्थिति सप्ताह, श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव, रक्षाबन्धन, श्री गुरुपूजन (श्री गुरु दक्षिणा) आदि का यथासमय आयोजन करते ही हैं और करेंगे भी।
- 14 अगस्त 1947 को हुआ भारत विभाजन दुर्भाग्यपूर्ण तो है पर स्थायी नहीं है- ऐसा प्रत्येक राष्ट्र भक्त का मानना है। अतः इस दिन को (अखण्ड) भारत माता पूजन एवं अखण्ड भारत संकल्प दिवस के रूप में मनायें- ऐसा आग्रह है। ऐसे कार्यक्रम विद्यालयों में और समाज के बीच जाकर भी आयोजित किये जा सकते हैं।
- जो बातें ध्यान में आने से रह गई हों, और आप सभी अनुभवी बन्धुओं के ध्यान में आती हों, उनको भी इसमें जोड़ते हुए कार्य निष्पादन की योजना बनायेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है।
- शाखा पुस्तिका का निर्माण हेतु आपके, अनुभवों और सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी। संघ कार्य वेग के साथ प्रवाहमान हो, आप सभी बन्धुओं का उत्साह नये सत्र में दोगुना हो, इस आशा अभिलाषा के साथ सभी को दीर्घ जीवन और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना।

शेष शुभ....

आपका शुभेच्छु

अजेय कुमार

प्रान्त बौद्धिक शिक्षण प्रमुख

जे-223 गामा-II, ग्रेटर नोएडा

# विद्यार्थी शाखा

## सुभाषित

### जुलाई माह हेतु

**वृक्ष कबहूँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर ।**
**परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ॥**

**अर्थ :** वृक्ष कभी अपने फल स्वयं नहीं खाते, नदी अपने लिये जल संग्रह नहीं करती। सज्जनों का जीवन भी परोपकार के लिये होता है।

### अगस्त माह हेतु

**वाणी रसवती यस्य, यस्य श्रमवती क्रिया ।**
**लक्ष्मी दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवनम् ॥**

**अर्थ :** जिसकी वाणी में मधुरता, जो परिश्रमशील है तथा जिसका धन दान के लिये है, उसका जीवन सफल माना जाता है।

### सितम्बर माह हेतु

**जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।**
**वह नर नहीं नर-पशु निरा और मृतक समान है ॥**

**अर्थ :** जिसको अपने गौरव व अपने देश पर स्वाभिमान नहीं है, वह व्यक्ति मनुष्य होने पर भी मनुष्य नहीं है। वह पशु के समान है और मृतक के समान है।

# अमृत वचन

**जुलाई माह हेतु**

**स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि** जब कभी भारत के सच्चे इतिहास का पता लगाया जायेगा, तब यह निःसंदेह प्रमाणित होगा कि धर्म के समान ही विज्ञान, दर्शन, संगीत, साहित्य, गणित, ललित कला आदि में भी भारत सम्पूर्ण संसार का आदि गुरु रहा है।

**अगस्त माह हेतु**

**प.पू. श्री गुरुजी ने कहा कि** सामान्य स्वयंसेवक होना प्रतिष्ठा की बात है। उसके समान गर्व करने योग्य अन्य कोई बात नहीं हो सकती। पद और अधिकार तो केवल व्यवस्था की बातें हैं मूल आधार है स्वयंसेवक होना।

**सितम्बर माह हेतु**

**पू. बालासाहब देवरस ने कहा कि** डॉक्टर जी कोरे चिन्तक नहीं थे। उन्होंने व्यक्ति निर्माण अर्थात् व्यक्ति की मनोरचना सम्भालने के लिये दैनिक शाखा की अनोखी पद्धति का विकास किया और निज के उदाहरण से हजारों अन्तःकरणों में हिन्दू संगठन के स्वप्न को साकार कर दिखाने के संकल्प को जगाया।

## बोधकथा – १

# नींव का पत्थर

बात सन् 1928-29 की है। लाल बहादुर शास्त्री जी लोक मण्डल की जिम्मेदारियाँ लेकर इलाहाबाद पहुँचे थे। दुबले-पतले, सिर पर टोपी, पैरों में देशी जूते, हंसमुख, संकोची स्वभाव के और दलगत राजनीति से सर्वथा अलग। उनका कहना था कि अखबारी विवरणों में उनका नाम न छपे। कुछ मित्रों ने एक दिन पूछ ही लिया, 'आपको अखबारों में नाम छपने से परहेज क्यों है? कुछ पशोपेश के बाद उन्होंने बताया, 'लोक सेवक मंडल के कार्य के लिये दीक्षा के समय लाला लाजपत राय जी ने कहा था- 'लालबहादुर! ताजमहल में दो तरह के पत्थर लगे हैं। एक बढ़िया किस्म का संगमरमर है, उसी से मेहराब और गुम्बद बने हैं, उसी से जालियाँ काटी गई हैं, उसी से मीनाकारी और पच्चीकारी की गई हैं। उन्हीं में रंग-बिरंगे बेल-बूटे भरे गये हैं। दूसरी तरह के पत्थर है- टेढ़े-मेढ़े और बेढंगे। वे सब नींव में दबे पड़े हैं। उनकी कोई प्रशंसा नहीं करता, लेकिन इन्हीं नींव के पत्थरों पर ताजमहल की इमारत खड़ी है। मैं चाहता हूँ, लोक-सेवक मंडल के आजीवन सदस्य नींव के पत्थर बने। वे ठीक कामों पर ध्यान दें, और सस्ते प्रचार से खुद को बचाये रखें। दोस्तों, मुझे क्षमा करें, मैं नींव का पत्थर ही रहना चाहता हूँ।

बोधकथा – २

# रूप व गुण- श्रेष्ठ कौन?

मगध सम्राट चन्द्रगुप्त ने एक बार आचार्य चाणक्य से कहा, 'गुरुवर, काश! आप सुन्दर होते? चाणक्य ने कहा, ''राजन! मनुष्य की पहचान उसके गुणों से होती हैं, रंगरुप से नहीं।' तब चन्द्रगुप्त ने पूछा, ''आचार्य, क्या आप ऐसा कोई उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हो जहाँ 'गुण' के सामने 'रूप' छोटा रह गया हो। तब चाणक्य ने राजा को दो अलग-अलग गिलास पानी पीने को दिया। फिर चाणक्य ने कहा, 'पहले गिलास का पानी स्वर्ण के घड़े का था और दूसरे गिलास का पानी मिट्टी के घड़े का। आपको कौन-सा पानी अच्छा लगा।' चन्द्रगुप्त बोले, 'मिट्टी के घड़े का'। पास ही सम्राट की पत्नी बैठी थी। वह इस उदाहरण से काफी प्रभावित हुई। महारानी ने कहा, 'वो सोने का घड़ा किस काम का जो संतुष्टि न दे सके। मटकी भले ही कुरुप हो, लेकिन प्यास मटके के पानी से ही बुझती है।' यानि रूप नहीं गुण महत्वपूर्ण होता है।

**''उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।**
**वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥''**

**( विष्णु पुराण 2-3-01 )**

**''हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्।**
**तं देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्ष्यते॥**

**( बार्हस्पत्य शास्त्र )**

बोधकथा – 3

# शिक्षा का महत्व

एक बार डॉ. अब्दुल कलाम अपने सहयोगी सृजन पाल सिंह से कहा, 'तुम युवा हो, शिक्षित हो। तुम अपने उत्तम कार्यों से देश को बहुत कुछ दे सकते हो। यह बताओ कि तुम स्वयं को किस प्रकार से याद किये जाना चाहते हो।' डॉ. कलाम का यह प्रश्न सुनकर सृजन पाल स्तब्ध रह गये कि अभी तो उन्होंने अपने जीवन में कुछ विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त भी नहीं की हैं जिन्हें पूरा राष्ट्र अथवा विश्व याद रख सके। सृजनपाल की यह स्थिति देख डॉ. कलाम बोले, 'क्या हुआ। भाई, तुम्हें अभी तक के अपने कार्यकाल में जो भी उल्लेखनीय व बढ़िया कार्य लगा हो, वही बता दो।' सृजनपाल ने विनम्रतापूर्वक कहा, सर, जीवन में अभी सर्वोत्तम करना शेष है। दूसरे, मैंने तो अभी तक ऐसी कोई विशेष उपलब्धियाँ पाई भी नहीं है। ऐसे में कुछ समझ नहीं आ रहा कि आपके प्रश्न का क्या उत्तर दूँ? डॉ. कलाम बोले, 'चलो बताओ, तुम अपनी उपलब्धियों के कारण याद किये जाना चाहते हो या अपने कार्य के माध्यम से?' सृजनपाल ने कहा, दोनों कारणों सें। लेकिन कृपया आप बताइये, आप स्वयं को किस रूप में याद किया जाना चाहते हैं- राष्ट्रपति, वैज्ञानिक, लेखक या मिसाइलमैन। अपने प्रश्न के बाद सृजनपालन डॉ. कलाम की ओर देख ही रहे थे कि वह बोले, 'मैं तो चाहूँगा कि लोग मुझे एक शिक्षक के रूप में याद रखें। एक शिक्षक ही ऐसा होता है जो बच्चों को शिल्पकार की तरह तराश कर उसे जीवन में सफल बनाता है। इसलिये मैं प्रयास करुँगा कि लोग मुझे शिक्षक के रूप में ही जानें।

●

# व्यवसायी शाखा

## सुभाषित

**जुलाई मास हेतु**

**उद्यमं साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।**
**षडेते यत्र वर्तन्ते, तत्र देवः सहायकृत ॥**

**अर्थ :** प्रयास, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति तथा पराक्रम जहाँ यह छः गुण होते हैं वहाँ देव भी सहायक होते हैं।

**अगस्त माह हेतु**

**नहि वेरेन वेरानि, सम्मंतीथ कुदाचन ।**
**अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो ॥**

(धम्म पद यमक वग्गो 5) (पाली भाषा)

**अर्थ :** वैर से कभी वैर शांत नहीं होता, अवैर से (स्नेह, प्रेम से) ही शांत होता है, यही सनातन धर्म है।

**सितम्बर माह हेतु**

**यतो यतो निश्चयरति, मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।**
**ततस्तस्तो नियम्यैतद्, आत्मन्येव वशं नयेत् ॥**

(गीता 6/26)

**अर्थ :** यह चंचल और अस्थिर मन जहाँ-जहाँ विचलित होता है, वहाँ से उसे नियंत्रित करके स्वयं के वश में करें।

# अमृत वचन

## जुलाई माह हेतु

**प.पू. श्रीगुरुजी ने कहा कि** यह हिन्दू राष्ट्र सनातन है। इस भूमि के साथ इसका सम्बन्ध सदा सर्वदा का है। इसलिये यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि अनेकानेक महापुरुषों ने इसकी अखण्ड धारा को ही पुष्ट किया। इसके शताब्दियों के लम्बे प्रवाह को खण्डित नहीं होने दिया। उसी प्रकार हम भी इससे अभिन्नत्व के साथ तादात्म्य प्राप्त करेंगे और भूल से भी ऐसा कोई व्यक्तिगत अथवा संस्थागत अभिनिवेश निर्माण नहीं होने देंगे, जो अलगाव का परिचायक हो।

## अगस्त माह हेतु

**पं. दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि** विश्व का ज्ञान और आज तक की अपनी सम्पूर्ण परम्परा के आधार पर हम ऐसा भारत निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से अधिक गौरवशाली होगा। जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ सम्पूर्ण मानव ही नहीं, अपितु सृष्टि के साथ एकात्मता का साक्षात्कार कर 'नर से नारायण' बनने में समर्थ हो सकेगा। यह हमारी संस्कृति का शाश्वत, दैवी और प्रवाहमान रूप है। चौराहे पर खड़े विश्व-मानव के लिये यही हमारा दिग्दर्शन है।

## सितम्बर माह हेतु

**मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी ने कहा कि** सम्पूर्ण कार्य पद्धति का लक्ष्य है, हर एक व्यक्ति के हृदय पर संस्कार देना कि मैं अकेला नहीं, पृथ्वी नहीं, सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्म हूँ। मनुष्य के शरीर और इसके एक अवयव का जो सम्बन्ध होता है, वहीं सम्पूर्ण समाज और एक व्यक्ति का सम्बन्ध है। इसी दृष्टि से सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्मता का संस्कार हर हृदय पर अंकित करने के लिये सभी कार्यक्रमों और कार्यपद्धति की रचना है।

# चर्चा - 1

## शाखा कार्यकर्ता ( टोली )

## ( कार्यवाह, मुख्य शिक्षक, गण शिक्षक, गटनायक )

**1. शाखा कार्यवाह -** शाखा क्षेत्र का प्रमुख है। मुख्य शिक्षक व शाखा टोली को सम्भालना एवं उसका विकास करना, अभिभावकों से सम्पर्क व सम्वाद रखना। शाखा को मुहल्ले से व मुहल्ले को शाखा से जोड़ना प्रमुख कार्य।

**2. मुख्य शिक्षक-** शाखा टोली का विकास, 60 मिनट की शाखा के कार्यक्रमों की रचना व संचालन, गट एवं गण व्यवस्था को विकसित करना। गणशः कार्यक्रमों का संचालन करना।

**3. गण शिक्षक -** गण का शिक्षक। संघस्थान पर अपने गण को संचालित करना, उत्साह व मस्ती से परिपूर्ण शारीरिक कार्यक्रमों की संरचना एवं क्रियान्वयन करना। साथ ही गटनायकों व अपने स्वयंसेवकों से स्नेह सम्बन्ध रखना।

**4. गटनायक -** गट का प्रमुख। अपने मौहल्ले, गली में नेतृत्व प्रदान करने वाला। अपने गट के स्वयंसेवकों उनके परिवारजनों तथा अन्य नये बन्धुओं से सम्पर्क-संवाद करने तथा उनको शाखा पर लाने वाला व उनके सुख-दुख में सहभागी होने वाला।

- गटनायक याने उस क्षेत्र का नायक- प.पू. श्रीगुरुजी।
- क्षेत्र के प्रत्येक घर से सम्पर्क तथा प्रत्येक घर से स्वयंसेवक बनाना।

**स्वयंसेवक के गुण और व्यवहार**

**1. स्वयंसेवक के गुण-**

1. अक्षय ध्येयनिष्ठा 2. निरन्तर साधना 3. 24 घंटे का स्वयंसेवक 4. चरित्रवान 5. समर्पण (अहंकार शून्यता, अनुशासित व संघानुकूल जीवन

रचना) 6. व्यवहार कुशलता (छोटे-बड़े स्वयंसेवकों, परिवार, निवास व व्यवसाय क्षेत्र आदि के प्रति) 7. दृढ़ता (वीरव्रत, जैसे 'लहू देंगे परन्तु देश की माटी नहीं देंगे') 8. आत्मविश्वास 9. विजिगीषु वृत्ति 10. आत्मनिरीक्षण 11. तत्व तथा व्यवहार में एकरूपता (कथनी-करनी समान) 12. लोकसंग्रही 13. प्रयत्न पूर्वक स्वयं के सर्वांगीण विकास के लिये आग्रही (अधिकाधिक दायित्व ग्रहण करने की मानसिकता)।

**2. स्वयंसेवक का व्यवहार**

**क. संघ कार्य में-** स्वयंसेवकों के साथ परस्पर बन्धुभाव, निःस्वार्थ, निश्छल, आत्मीयता व स्नेहपूर्ण व्यवहार ( पारिवारिक अनुभूति) से ध्येय की ओर बढ़ाने वाला। एक-दूसरे का विकास करने के प्रयत्न में संलग्न (कई बार मित्रता तो बनी रहती है परन्तु संघ बीच में से निकल जाता है, यह योग्य नहीं है), सबके गुणावलोकन करने वाला दोषान्वेषण करने वाला नहीं।

**ख. स्वयंसेवकों का अधिकारी के प्रति-** आदर, श्रद्धा व विश्वास युक्त व्यवहार। अधिकारी के मार्गदर्शन के अनुसार जीवन में सद्‌गुण लाने का प्रयत्न । सदैव गुणग्रहण करने की मनोभूमिका। कार्य को उत्तरदायित्व पूर्ण तथा प्रमाणिकता से सम्पन्न करने का भाव, अनुशासनयुक्त व्यवहार। बनावटी व्यवहार हमारे विकास तथा कार्य में बाधक होगा।

**ग. अधिकारी का स्वयंसेवक के प्रति-** स्वयंसेवक के विकास के लिये सहयोगी एवं मार्गदर्शक। कार्यवृद्धि की दृष्टि से विधि-निषेध सहित बताये गये व्यवहार को अपने जीवन में भी क्रियान्वित करने वाला, पक्षपात रहित व आत्मीयतापूर्ण व्यवहार। माता जैसा वात्सल्य, पिता जैसा हितचिन्तक, बड़े भाई जैसी आत्मीयता, मित्र जैसी अभिन्नता।

**3. समाज के साथ व्यवहार-** समाज के प्रति श्रद्धाभावी। सदैव समाज के हित के लिये चिन्तन करने वाला, समाज के प्रत्येक घटक से बन्धुभाव, समाज के सुख-दुख में संवेदनाओं के साथ तादात्म्य भाव। भीषण परिस्थितियों में भी देश एवं समाज कार्य के लिये सदैव तत्पर रहने वाला,

संकट व चुनौतियों के समय आगे और पुरस्कार मिलते समय सदैव पीछे रहने वाला। अहंकार शून्य, सेवाभावी, स्नेहिल। व्यवसाय/नौकरी में प्रमाणिक। परिवार, वर्ग, भाषा, संस्था, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के मिथ्याभिमान से दूर रहने वाला।

4. **व्यक्तिगत जीवन में -** मृदुभाषी, निश्छल, पारदर्शी, नियमित, व्यवस्थाप्रिय।

- समय नियोजक, हँसमुख, मितव्ययी, मिलनसार, सम्वेदनशील, समयपालक।
- व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा सांघिक जीवन में कर्तव्यों को आचरण में प्रकट करने वाला। सभी कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए संघ कार्य को प्राथमिकता देने वाला व स्वदेशी का आग्रही।
- परिवारजनों में संघ कार्य के प्रति श्रद्धा, आत्मीयता एवं विश्वास निर्माण करने वाला।
- संघ के संस्कारों के कारण जीवन में सद्गुण सम्पदा बढ़ रही है। ऐसा परिवारजनों को आभास कराने वाला।
- किसी भी प्रकार के संकट (आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि) आने पर भी मन का संतुलन बनाये रखने वाला।
- सर्वत्र व्यवहार में तादात्म भाव मर्यादापूर्ण व्यवहार, विवेकबुद्धि। यद्यपि **''शुद्धम लोक विरुद्धं न करणीयं न चरणीयम्।''**

**अनुशासन का स्वरूप व महत्व**

- अनुशासन संगठन का प्राण है। उसी से शक्ति का निर्माण होता हैं- ''समूह-अनुशासन-संगठन।''
- स्वच्छन्दता को स्वतंत्रता नहीं कहा जा सकता। अनुशासन प्रतिबन्ध नहीं है।
- अनुशासन द्वारा ही शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को ध्येयानुरूप बनाना सम्भव।

- बिना किसी प्रतिदान अथवा पुरस्कार की इच्छा या बिना किसी भय या दबाव के, स्वयंस्फूर्त, तन-मन व कर्तव्य बुद्धि से उच्चतम ध्येय की प्राप्ति में सहयोग करना अनुशासन है।
- साध्य प्राप्ति के लिये विधि-निषेधों का स्वयं स्फूर्ति से पालन व उसका अभ्यास करना भी अनुशासन है।
- अनुशासन का सम्बन्ध ध्येय, जीवन और कार्य से है।
- सामाजिक अनुशासन एकांकी जीवन से सम्भव नहीं है।
- अनुशासन और सैनिकीकरण में अन्तर।
- अनुशासन में भी स्निग्धता का वातावरण निर्माण करना सम्भव।
- अनुशासन का अर्थ है 'निश्चित नियम-व्यवस्था से चलना।'
- शारीरिक अनुशासन-आज्ञा पालन का भाव तथा उच्च स्तर की मानसिकता है। यह यान्त्रिक नहीं हो सकता।
- संयम अनुशासन का आवश्यक लक्षण है।
- अनुशासन का बाहरी स्वरूप कठोर किन्तु आन्तरिक स्वरूप विनम्र होता है।
- अनुशास के कारण 1 और 1 मिलकर 11 अर्थात् (शक्ति) बनती हैं वहीं बिना अनुशासन के एक और दो भी नहीं बन पाते।
- समाज में सेना की प्रतिष्ठा अनुशासन के कारण ही है। अनुशासन विहीन संगठनों/संस्थाओं को अपयश प्राप्त होता है।
- अनुशासन के अभाव में असफलता (मंगल पांडे का उदाहरण.)।
- अनुशासन के पालन से सफलता, (आपातकाल, छप्पर उठाना, नौ मतों का एक मत, खेल आदि उदाहरण)।
- सूचना का पालन न करने से 'मोगा हत्याकाण्ड'। (उग्रवाद के समय प्रत्येक शाखा में सुरक्षा के लिये दो स्वयंसेवक बाहर रहें इस सूचना का पालन न करने के कारण 21 स्वयंसेवकों व अन्य दो लोगों का बलिदान)।

# चर्चा - 2

**बैठकों का महत्व, सिद्धता व संचालन**

कार्य की योजना बनाने, कार्यकर्ताओं के गुणात्मक विकास, वैचारिक स्पष्टता, सिद्धता, प्रखरता एवं दृढ़ता निर्माण करने तथा सामूहिक निर्णय हेतु, निश्चित व निर्धारित अन्तराल पर विभिन्न स्तरों पर (भौगोलिक एवं दायित्वानुसार) बैठकें होती हैं।

**बैठकें क्यों?**

- विचारधारा की स्पष्ट कल्पना देने के लिये।
- कार्यकर्ताओं की सक्रियता एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिये।
- शाखा की उपस्थिति व कार्यक्रमों पर विचार विमर्श हेतु।
- कार्यक्रमों (नैपुण्य वर्ग, एकत्रीकरण आदि) को सुसंचालित करने व कार्यकर्ताओं की मानसिक सिद्धता हेतु।
- योजना पक्ष पर विचार करने के लिये।

**बैठकों के प्रकार-**

1. योजनात्मक 2. गुणात्मक
3. नियमित- साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक आदि व कार्यकर्ताओं के स्तर के अनुसार।
4. नैमित्तिक-किसी विशेष कार्यक्रम की तैयारी या उत्सव के लिये बाद में मूल्यांकन व समीक्षा हेतु।
5. श्रेणी बैठक- यथा विद्यार्थी, कर्मचारी, व्यवसायी आदि।

**सिद्धता-**

1. बैठक का उद्देश्य निश्चित करना।
2. पर्याप्त समय पूर्व अपेक्षित कार्यकर्ताओं की सूची, स्थान, समय, दिन व दिनांक निश्चित करना तथा सूचना देने के लिये सूची का विभाजन

करना।

3. बैठक की व्यवस्था- बैठक का स्थान, व्यवस्थितता, स्वच्छता, बिछावन, प्रकाश, प.पू. डॉक्टर जी एवं श्रीगुरु जी के चित्र, मालायें, अगरबत्ती/धूप, गणगीत, अधिकारी का स्थान आदि।
4. जो अपेक्षित हो उन सभी को उपस्थित रहने का आग्रह।

**सञ्चालन-**

- बैठक का वातावरण उत्साहित करने वाला आशा, उत्साह, प्रेरणा व प्रफुल्लता प्रदान करने वाला हो (बैठक में रोते हुए आने वाले भी हँसते हुए अर्थात् प्रसन्न होकर जायें)।
- बड़ी बैठक कम समय की तथा छोटी बैठक अधिक समय की।
- बैठक के विषयों का पूर्व एवं पूर्ण चिंतन। बैठक के विषयों की बैठक से पूर्व छोटी टोली के साथ चर्चा करना। (बड़ी बैठक से पूर्व छोटी बैठक)।
- सकारात्मक उत्तर देने वालों से ही पहले पूछना (माननीय बालासाहब द्वारा बैठक लेने का उदाहरण) लेकिन बैठक में सभी को सहभागी बनाना।
- अनुपस्थित बन्धुओं को भी बैठक में हुई चर्चा एवं निर्णयों के बारे में बताने हेतु उपयुक्त एवं त्वरित व्यवस्था होनी चाहिये।
- अनौपचारिक बैठक महत्वपूर्ण- अनौपचारिक मिलना अधिक परिणामकारी।

# चर्चा - 3

## सर्वव्यापी व सर्वस्पर्शी कार्य

**सर्वव्यापी अर्थात् संघ का भौगोलिक विस्तार-** राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति करने के लिये आवश्यक है कि सभी क्षेत्रों में कार्य हो।

पूज्य डॉक्टर जी ने कहा था, ''जहाँ-जहाँ हिन्दू रहता है वहाँ-वहाँ संघ पहुँचना चाहिये।'' अर्थात् प्रत्येक जिला, खण्ड, नगर, न्याय पंचायत, ग्राम सभा व गाँव तथा गाँव के सभी परिवारों, मौहल्लों व बस्तियों-उपबस्तियों व उनके भी सभी परिवारों में स्वयंसेवक हों। ग्राम तथा मौहल्ले की शाखाओं में सभी गलियों से स्वयंसेवक आने चाहिये। (नागपुर का उदाहरण- मानचित्र लेकर बैठने पर ध्यान में आया कि एक तिहाई बस्तियों में कार्य ही नहीं था।

- धीरे-धीरे पूर्ण जिला, पूर्ण खण्ड, पूर्ण मण्डल, पूर्ण नगर व पूर्ण बस्ती की ओर बढ़ना। पूर्ण मण्डल अर्थात् मण्डल के सभी गाँवों में शाखा, पूर्ण नगर अर्थात् नगर की सभी बस्तियों में शाखा।

**सर्वस्पर्शी अर्थात् संघ का सामाजिक विस्तार-** समाज के सभी वर्गों, जाति-बिरादरी, मत-पंथ-सम्प्रदायों को अपने कार्य के अन्तर्गत लाना ही सम्पूर्ण हिन्दू समाज का संगठन करना है। अतः हिन्दू समाज के सभी वर्गों, जाति-बिरादरी, मत-पंथ-सम्प्रदायों, उपपंथों व सभी दलों के बन्धुओं को शाखा में लाने का प्रयास हो। इसी प्रकार सभी आयु वर्ग के, सभी प्रकार की प्रतिभाओं व विभिन्न व्यवसाय करने वाले बन्धुओं को भी शाखा से जोड़ना चाहिये। श्रेणीशः बैठकों का भी उपयोग करना चाहिये। सेवा बस्तियों पर विशेष ध्यान।

**स्वयंसेवक की संघोन्मुखी दिनचर्या**

- स्वयंसेवक एक घण्टे की शाखा का ही नहीं अपितु चौबीस घंटे का स्वयंसेवक।
- 1 घण्टा शाखा पर, शेष 23 घंटे का समाज सम्पर्क के लिये उपयोग।
- प्रत्येक मित्र स्वयंसेवक तथा प्रत्येक स्वयंसेवक मित्र।
- एक बार का स्वयंसेवक जीवन पर्यन्त स्वयंसेवक (एकदा

स्वयंसेवक-सर्वदा स्वयंसेवक)।

- व्यक्तिगत मित्रता को स्वयंसेवकत्व की स्थिति में पहुँचाना।
- संघ कार्य के लिये अधिकाधिक समय निकाल सके ऐसा व्यवसाय चुनना।
- संघ कार्य के लिये समय निकालने वाले सूत्र- अपने दैनिक कार्यों (स्नान, भोजन, विश्राम आदि) में न्यूनतम समय लगाना।
- व्यर्थ की गपशप, बहस आदि में समय नष्ट नहीं करना।
- अनावश्यक कार्यों को यथा सम्भव टालना।
- पहले दिन की रात्रि में अगले दिन की व्यवस्थित योजना बनाना।

**कार्य योजना -**

- अपने मौहल्ले व व्यक्तिगत, व्यवसायिक व सामाजिक क्षेत्र में सम्पर्क में आने वाले बन्धुओं को संघ का उद्देश्य, आवश्यकता आदि समझाना। उन्हें कार्यक्रमों में बुलाना, अपना साहित्य पढ़ने के लिये देना, संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं अथवा अधिकारियों से मिलवाना। उनके सुख-दुख में सम्मिलित होना, अंत में उनको शाखा में लाना।
- अपना जीवन, व्यावहारिक, प्रमाणिक व प्रेरक हो तथा कथनी-करनी में अंतर न हो।
- वाणी, चरित्र व धन की प्रमाणिकता उपदेश से नहीं अपितु अपने व्यवहार से प्रस्तुत करना।
- शाखा को अपने जीवन की प्राथमिकता बनाना। 23 घंटे संघ कार्य वृद्धि के लिये प्रयास करना।
- घरों का सम्पर्क-स्वयंसेवक तथा उनके परिवार के सभी लोगों के साथ आत्मीय सम्बन्ध।

# श्री गुरु पूर्णिमा, रक्षाबन्धन व श्री गुरु पूजन ( दक्षिणा ) कार्यक्रम

**अपेक्षित कार्यकर्ता**

- सम्पत् हेतु
- गणगीत हेतु
- एकलगीत हेतु
- अमृत वचन हेतु
- प्रार्थना हेतु
- वक्ता/मुख्य अतिथि
- कार्यक्रम विधि बताने एवं मंचासीन बन्धुओं का परिचय कराने हेतु।
- कार्यक्रम स्थल से बाहर की व्यवस्था (स्वागत करते हुए, जूते, चप्पल, वाहन व्यवस्थित एवं यथा स्थान खड़े करवाने तिलक लगाने, कार्यक्रम में बैठने से पूर्व ध्वज प्रणाम करना आदि सूचना देने) हेतु।
- श्री गुरु पूजन (दक्षिणा) कार्यक्रम में पूजन हेतु लिफाफे देने एवं सूची बनाने हेतु अलग से कार्यकर्ता अपेक्षित है।

**आवश्यक साम्रगी :**

- ❖ मौसमानुकूल उपयुक्त एवं स्वच्छ स्थान (बिछावन सहित)।
- ❖ चूना एवं रस्सी (रेखांकन हेतु)
- ❖ ध्वज दण्ड हेतु स्टैण्ड (यदि स्टैण्ड की व्यवस्था नहीं है तो उचित संख्या में ईंटें)।
- ❖ चित्र (भारतमाता, डॉक्टर जी एवं श्री गुरुजी के मालाओं सहित)
- ❖ मुख्य अतिथि/मुख्य वक्ता के लिये मंच/कुर्सियां।
- ❖ सज्जा सामग्री (रिबिन, आलपिनें, सेफ्टी पिनें, चादरें/ चाँदनी, पर्दे, सुतली, गोंद आदि)।
- ❖ पुष्प, थाली, धूपबत्ती, प्लेट, माचिस, चित्रों हेतु मेजें, चादरें।
- ❖ तिलक हेतु चन्दन अथवा रोली, अक्षत, कटोरी/थाली।
- ❖ कार्यक्रम यदि रात्रि में है तो समुचित प्रकाश व्यवस्था।
- ❖ ध्वनि वर्धक बैटरी सहित (यदि आवश्यक हो तो)।

**विशेष** -

- ❖ श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव हेतु भगवान वेदव्यास जी का माला सहित चित्र योग्य स्थान पर लगाना अपेक्षित है।
- ❖ श्री गुरु दक्षिण कार्यक्रम हेतु लिफाफे, कागज, कार्बन (सूची बनाने हेतु) एवं पूजन के समय गीत के लिये टेपरिकार्डर एवं अच्छे गीतों की ध्वनिमुद्रिकायें (कैसिट्स)।
- ❖ रक्षाबन्धन कार्यक्रम हेतु सभी स्वयंसेवक रक्षासूत्र लेकर आयेंगे।

**कार्यक्रम विधि :**

- सम्पत्
- गणगीत
- अधिकारी आगमन
- कार्यक्रम की विधि बताना एवं सूचनायें आदि
- ध्वजारोहण
- मंचासीन बन्धुओं का परिचय
- अमृत वचन
- एकलगीत
- वक्ता/अतिथि द्वारा उद्‌बोधन
- प्रार्थना
- ध्वजावतरण
- विकिर

**विशेष-**

- अधिकारी आगमन के समय उत्तिष्ठ की आज्ञा होगी। पश्चात् आरम् एवं दक्ष की आज्ञा पर सभी स्वयंसेवक दक्ष में खड़े होंगे और ध्वजारोहण होगा।
- श्री गुरु पूर्णिमा के उत्सव में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारी द्वारा भगवान वेदव्यास के चित्र पर माल्यार्पण (यदि है तो) के बाद दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित करना।
- ध्वजारोहण तथा ध्वजावतरण के समय मुख्य अतिथि/वक्ता अग्रेसर (अभ्यागत) के बराबर तथा माननीय संघचालक/ कार्यवाह अपने निर्धारित स्थान पर खड़े होंगे।
- कार्यक्रम के उपरांत परिचय की दृष्टि से शाखा टोली सहित प्रमुख कार्यकर्ताओं को रोकना योग्य रहेगा।

# श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव

## श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव हेतु अमृत वचन

प.पू. श्रीगुरुजी ने कहा- संघ में न तो व्यक्तिगत अभिमान के लिये स्थान है और न संस्था के अभिमान के लिये अवसर है। संघ तो केवल अपने अखिल भारतवर्ष का अभिमानी है। फिर अपनी इस दिव्य ध्वजा को छोड़कर अन्य किसी प्रतीक के प्रति संघ किस प्रकार श्रद्धा रख सकता है? हम दूसरे किसी ध्वज का अनादर करना नहीं चाहते, पर हमारी श्रद्धा प्राचीन काल के इतिहास और परम्परागत भगवे ध्वज को ही समर्पित है।

## एकलगीत

प्राचीन के मुख की अरुण ज्योति
यह भगवाध्वज फहरे, यह भगवाध्वज फहरे ।।ध्रु।।
यह वह्नि-शिखा का वेश किये, गत वैभव का संदेश लिये,
हिन्दू संस्कृति का अचल रूप, यह भगवाध्वज फहरे
यह भगवाध्वज फहरे।।1।।
भारत माता का उच्च भाल- आर्यों के उर की अग्नि-ज्वाल
इस राष्ट्रभक्ति का असर चिह्न, यह भगवाध्वज फहरे।
यह भगवाध्वज फहरे।।2।।
यह चन्द्रगुप्त कर की कृपाण, विक्रमादित्य का शिरस्त्राण?
इस आर्य देश का कठिन कवच, यह भगवाध्वज फहरे ।
यह भगवाध्वज फहरे।।3।।
वन्दा गुरु के बलिदानों से, रक्षित छत्ता के प्राणों से,
नीतिज्ञ शिवा का विजय केतु, यह भगवा ध्वज फहरे।।
यह भगवाध्वज फहरे।।4।।

# विचारणीय बिन्दु

✦इस वर्ष 27 जुलाई, 2018 को गुरु पूर्णिमा है। गुरु पूर्णिमा शब्द समूह में पूर्णिमा पूर्णमासी का बोध कराता है। पूर्णमासी हिन्दू समाज में अत्यंत पवित्र पर्व के रूप में मान्यता प्राप्त है। प्रतिमास एक पूर्णमासी होती है। इस प्रकार एक वर्ष में बारह पूर्णमासी होती हैं। इनमें आषाढ़ मास की पूर्णमासी को गुरुपूर्णिमा के रूप में जाना जाता हैं यह एक पर्व है, जो हम गुरुपूजा के रूप में मनाते हैं।

✦इस पर्व पर गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर व्यक्ति को प्राप्त होता है। व्यक्ति ज्ञानवान बन जीवन में योग्य मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की क्षमता एवं सामर्थ्य जिसके चरणों में बैठकर प्राप्त करता है, उस श्रेष्ठ पुरुष को अपने समाज में गुरु का स्थान दिया गया है। ऐसे गुरु के इस श्रेष्ठ कार्य के कारण व्यक्ति अपनी कृतज्ञता को उसकी पूजा करते हुए प्रकट करता है। किसी भी उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हिन्दू समाज की विशेषता है। गुरु पूर्णिमा पर्व का महत्व इस दृष्टि से समझने योग्य है।

✦व्यास पूर्णिमा के नाते भी गुरुपूर्णिमा की प्रसिद्धि है। यह वेदव्यास जी को स्मरण कराने वाला दिवस है। वेदव्यासजी को राष्ट्रगुरु के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। गुरु का महत्व व्यक्ति के जीवन में जितना है, उससे अधिक वेदव्यास जी का महत्व राष्ट्रजीवन में स्वीकार किया गया है। वेदव्यासजी ने भारतीय ज्ञान को सुनियोजित ढंग से सूत्रबद्ध, सुसंगठित करने का अभूतपूर्व कार्य किया है। उन्होंने अपौरुषेय वेदों का सम्यक्रूपेण वर्गीकरण कर

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद के रूप में लिपिबद्ध करने का महान कार्य किया है। इससे पूर्व वेद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कण्ठस्थ करने की परम्परा द्वारा प्राप्त होते रहे थे। इसीलिये वेद श्रुति के नाते विख्यात रहे हैं। श्रुति याने सुनकर कण्ठस्थ कर आगे की पीढ़ी को सुनाकर ज्ञान की सरिता को सतत प्रवाहमान बनाए रखना।

✦ महाभारत, उपनिषदों, पुराणों, भागवत् आदि श्रेष्ठ ग्रंथों के रचनाकार वेदव्यास जी माने जाते हैं। गीता जैसी महान रचना भी महाभारत का ही अंग है। उनसे मानव जीवन के उन्नयन हेतु कर्मप्रधान चिंतन प्राप्त हुआ। यह ज्ञान वेदव्यासजी ने सहज ही में सभी को सुलभ कराया है। इसी कारण पूरा राष्ट्र व्यासपूर्णिमा पर उन्हें स्मरण करता है। गुरु के प्रति आदर, भक्ति एवं श्रद्धापूर्ण व्यवहार भारतीय समाज में कब प्रारम्भ हुआ, यह शोध का विषय है। ''मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, गुरुदेवो भव'' उक्ति सर्वप्रसिद्ध है। माता-पिता के साथ ही गुरु को भी देवता माना गया है। वेदों की प्राचीनता की भांति गुरु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति की परम्परा भी अति प्राचीन है। गुरु शिष्य परम्परा का उल्लेख अपने शास्त्रों में हुआ है। इस संबंध में धर्मग्रंथों में प्रेरणाप्रद गाथायें पढ़ने को मिलती है। भारतीय वाङमय में देवासुर संग्राम का वर्णन है। देवताओं के गुरु बृहस्पति तथा असुरों के गुरु शुक्राचार्य होने का उल्लेख है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम बाल्यकाल में वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने हेतु रहे थे। योगेश्वर श्रीकृष्ण का भी संदीपनि के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करना प्रसिद्ध है। अतः यह स्पष्ट है कि गुरु शिष्य परम्परा की प्राचीनता के साथ गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना भी अत्यंत प्राचीन परम्परा के रूप में इस देश में विद्यमान है।

✦ इतना ही नहीं वरन् गुरु-शिष्य परम्परा की विद्यमानता चारों युगों- सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में होने का प्रमाण है। गुरु आश्रमों में शिष्यों की शिक्षा व्यवस्था रहती आई है। गुरु अत्यंत निस्पृही एवं निःस्वार्थी जीवनयापन करते हुए शिष्यों को शिक्षा प्रदान कर उन्हें ज्ञानवान बनाने के साथ ही उनके जीवन की दिशा निर्धारित कराते रहे हैं। व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के कल्याणार्थ जीवन भर कार्यरत रहने के कारण गुरु अत्यंत श्रद्धास्पद रहे हैं। सामान्य व्यक्ति के अतिरिक्त राजाओं के भी गुरु होने का उल्लेख है। दशरथ गुरु वशिष्ठ के मार्गदर्शन के राजकाज चलाते थे। महाभारत में कृपाचार्य एवं द्रोणाचार्य का वर्णन है। कलियुग में चाणक्य, स्वामी समर्थ रामदास एवं विद्यारण्य प्रसिद्ध हैं।

✦ समाज जीवन में गुरु के कार्यों के महत्व को विचारकों एवं विद्वानों ने अनुभव किया कि प्रसिद्ध उक्ति गुरुदेवों भव गुरु की महिमा को समुचित ढंग से व्यक्त नहीं करती। गुरु केवल देवता नहीं, वरन् साक्षात् ब्रह्मा विष्णु एवं महेश है। अतः उसे उसी रूप में देखते हुए नमस्कार करना उचित रहेगा।

**'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुविष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।**
**गुरुर्साक्षात् परब्रह्म, तस्मे श्री गुरये नमः॥**

✦ अनुभव में आगे चलकर यह भी आया कि गुरु की कृपा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन को योग्य दिशा प्राप्त नहीं हो सकती। मानवीय जीवन के श्रेष्ठ गुणों का अंकुरण तथा पूर्ण विकसित पुष्प के रूप में प्रकटीकरण गुरु की कृपा से ही सम्भव है। गुरु की कृपा से ही ईश्वर का साक्षात्कार भी सम्भव होता है। इसीलिए

यह कहा गया है-

**गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ।**
**बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो मिलाये।।**

✦ गुरु की कृपा से सामान्य व्यक्ति में असाधारण प्रतिभा, अनोखी कर्मठता तथा अदम्य आत्मविश्वास एवं साहस प्रकट होता है, यह इतिहास में हुई घटनाओं से प्रमाणित है। मूलशंकर नामक बालक ने स्वामी बिरजानन्द के रूप में योग्य गुरु के चरणों में बैठकर वेदों का आधिकारिक ज्ञान प्राप्त किया तथा स्वामी दयानन्द बन वेदों की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने में सफल हुआ। ऐसे ही बालक नरेन्द्र रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आकर उनकी कृपा से एक दिन स्वामी विवेकानन्द के रूप में हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता का डंका जगत् में बजाकर विश्व को चकित कर गया। चाणक्य, विद्यारण्य, स्वामी समर्थ रामदास आदि के नाम इसी परम्परा में विख्यात हैं।

✦ परिवार, कुल, पंथ, सम्प्रदाय आदि में गुरु के महत्व को स्वीकार करने की परम्परा भी हिन्दू समाज में विद्यमान है। सिख तथा जैनमत में गुरु परम्परा विद्यमान है। समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गुरुभक्ति का दृश्य देखने को मिलता है। यथा, अखाड़ों में मल्लयुद्ध (कुश्ती) सिखाने वाले पहलवान भी गुरु की संज्ञा प्राप्त कर सम्मान पाते हैं। स्व. गुरु हनुमान इस दृष्टि से पर्याप्त चर्चित हुए हैं। हिन्दू समाज में गुरु की प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा सर्वमान्य है।

✦ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पूरे राष्ट्र को सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन देने वाले भगवाध्वज को गुरु माना है। व्यक्ति के जीवन की अवधि राष्ट्र के संदर्भ में नगण्य है। राष्ट्र का जीवन सहस्त्रों वर्ष का होता है।

व्यक्ति सदा राष्ट्र के सामने प्रस्तुत नहीं रह सकता। दूसरे व्यक्ति का पूरा जीवन प्रेरणास्रोत है या नहीं इसीलिए व्यक्ति को गुरु मानने की परम्परा संघ में नहीं है।

✦ भगवाध्वज को गुरु मानकर संघ के सभी कार्यक्रम उसकी छत्रछाया में चलते हैं। वह हमारा प्रेरणास्रोत तथा हमारी संस्कृति एवं धर्म का सम्वाहक है। हमारे महापुरुषों का स्मरण कराने वाला है। हमारे साधु, महात्माओं तथा संतों के परिधान के गेरुए रंग से युक्त यह भगवाध्वज त्याग एवं समर्पण की प्रेरणा भी देता है। हमारे यहाँ होने वाले यज्ञों में उठती अग्नि शिखाओं का आकार प्राप्त कर तथा अग्नि की आभा से प्रदीप्त भगवाध्वज हमारे सम्पूर्ण इतिहास का बोध कराने की क्षमता रखता है।

✦ दण्ड पर आरुढ़ वस्त्रखण्ड को जड़ मानकर शंका करने वाले प्रश्न कर सकते हैं कि जो बोलने की क्षमता नहीं रखता तथा स्वयं चल-फिर नहीं सकता, वह हमारा मार्गदर्शन कैसे कर सकता है? हमारी शंकाओं का समाधान कैसे होगा? इस प्रकार का विचार भ्रामक है। हम निर्जीव पदार्थ से भी प्रेरणा, शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करते हैं। ऐसा अनेक घटनाओं से सिद्ध होता है। उदाहरणतः एकलव्य में धुनर्विद्या में निष्णात होने की घटना है। द्रोणाचार्य की प्रतिमा उसके लिये यह विद्या प्राप्त करने की प्रेरणास्रोत बनी। यही सत्य भगवाध्वज के संबंध में भी समझना चाहिये।

✦ व्यक्ति के स्थान पर किसी प्रतीक को गुरु मानकर उसकी छत्रछाया में कार्य करने की नई परिपाटी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने डाली है, ऐसा नहीं है। इतिहास में ऐसी घटनायें पूर्वकाल में भी हुई है। हमें स्मरण होगा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वनगमन के बाद उनकी

चरणपादुकाओं को सिंहासन पर रखकर भरत ने राजकाज चलाया था। सिख पंथ के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी ने जब यह अनुभव किया कि गुरु परम्परा आगे जारी रखने के लिये अपेक्षित योग्य व्यक्ति मिलना सम्भव नहीं है, तो उन्होंने भी व्यक्ति के स्थान पर ग्रंथ रख उससे प्रेरणा लेने की परम्परा प्रारम्भ की। हम भी आज भगवाध्वज के रूप में अपने गुरु का पूजन कर अपने जीवन के लक्ष्य को स्मरण करने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं।

## भाऊराव देवरस

**( जन्म 19 नवम्बर सन् 1917 ई. )**

अपने तृतीय सरसंघचालक स्व. पू. बाला साहब देवरस के कनिष्ठ भ्राता भाऊराव देवरस का जन्म नागपुर में हुआ। सन् 1927-28 में संघ के जन्मदाता डॉक्टर जी के सम्पर्क में आये। कुशाग्र बुद्धि के भाऊराव देवरस ने नागपुर से बी.ए. पास कर संघ की योजना से लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.कॉम., एल.एल.बी में एक साथ ही 1937 में प्रवेश लिया। लखनऊ में शाखा आरम्भ कर, उत्तर प्रदेश के प्रान्त प्रचारक बने। बी.काम., एल.एल.बी. की परीक्षा सर्वोच्च अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए। दीनदयाल जी, बापू राव जी मोघे, अटल बिहारी वाजपेयी, प.पू. रज्जू भैया आदि अनेक लोग उनके सम्पर्क में आये और स्वयंसेवक बने। विद्या भारती योजना उन्हीं के मस्तिष्क की उपज है। अंतिम दिनों में दिल्ली में रहकर विद्यार्थी परिषद्, विद्या भारती सहित विविध सहयोगी संगठनों का मार्गदर्शन करने लगे। 13 मई 1992 को उनका स्वर्गवास हो गया।

# श्री गुरुपूजन (दक्षिणा) हेतु

## अमृत वचन

**नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा-** हमें जिस राष्ट्रीय मुक्ति की कामना है वह त्याग और कष्ट सहन के रूप में अपनी कीमत लिये बिना नहीं मिल सकती। यह अनुभव करने के लिये जिसके पास हृदय है और जो कष्ट सहन करने के लिये तत्पर है उसे पूजा के पुष्प लेकर आगे आना चाहिये।''

## एकलगीत

विश्व गुरु तव अर्चना में, भेंट अर्पण क्या करें?
जबकि तन-मन-धन, तुम्हारे और पूजन क्या करें?

प्राची के अरुणिम छटा है, यज्ञ की आभा-विभा है,
अरुण ज्योतिर्मय ध्वजा है, दीप दर्शन क्या करें?।।1।।

वेद की पावन ऋचा से, आज तक जो राग गूँजे,
वन्दना के उन स्वरों में, तुच्छ वन्दन क्या करें ?।।2।।

राम के अवतार आएँ, कर्ममय जीवन चढ़ाएँ ,
अजिर तन तेरा चलाएँ, और अर्चन क्या करें ? ।।3।।

पत्र-फल और पुष्प जल से, भावना ले हृदय तल से,
प्राण के पल-पल विपल से, आज आराधन करें।।4।।

# विचारणीय बिन्दु

- हमारे जीवन विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन एवं समर्पण का प्रतीक।
- यह एक दिन का नहीं वरन् 365 दिन का समर्पण है
- वर्तमान समय में कार्य की पूर्ति हेतु धन की आवश्यकता। अतः स्वयंसेवक का समर्पण भाव पुष्ट करने हेतु वर्ष में एक बार श्री गुरुदक्षिणा कार्यक्रम।
- हमें सब कुछ समाज से, राष्ट्र से प्राप्त होता है, अतः उसी की सेवा में 'तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा' की भावना से समर्पण।
- यज्ञ की भावना से- यथाशक्ति नहीं, वरन् संगठन की अपेक्षा-आवश्यकतानुरूप।
- दान सहायता या चंदा नहीं वरन् समाज एवं राष्ट्र से उऋण होने का विनम्र प्रयास।
- संघ की इस विशिष्ट पद्धति से स्वयंसेवक का समर्पण भाव बढ़ता है एवं इसी से अपना संगठन आत्मनिर्भर बनता है।
- गुरु द्वारा किये गये अमूल्य उपकार की अनुभूति व्यक्ति को कृतज्ञता ज्ञापन एवं समर्पण की स्वाभाविक प्रेरणा देती है। भारतीय संस्कारों में कृतज्ञता ज्ञापन स्वाभाविक है। गुरु के प्रति इसी कृतज्ञता ज्ञापन एवं समर्पण का प्रतीक श्री गुरुदक्षिणा है। गुरुकुलों में शिष्य शिक्षा समाप्ति के बाद अपने गुरु को दक्षिणा देकर यह कृतज्ञता प्रकट करते रहे हैं। शिष्य अपनी क्षमता अथवा अपने गुरुजी की इच्छानुसार यह दक्षिणा देते थे। देश, काल, परिस्थिति के अनुसार दक्षिणा की प्रक्रिया और स्वरूप भिन्न रहे होंगे। परन्तु दक्षिणा का विधान भारतीय समाज में अविरल दीर्घकाल से मान्य रहा है।

- दक्षिणा पद्धति का प्रारम्भ होने की कोई निश्चित तिथि या काल तय करना कठिन है। परन्तु यह सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग अर्थात् सभी युगों में विद्यमान रही है। सतयुग में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की गाथा है। विश्वामित्र की इच्छानुसार दक्षिणा चुकाने हेतु उन्होंने स्वयं को डोम के यहाँ तथा अपनी पत्नी तथा बालक रोहिताश्व को भी दक्षिणा के बचे हुए धन की पूर्ति हेतु बेचा। द्वापर में एकलव्य ने अपने दायें हाथ का अँगूठा काटकर गुरु की इच्छानुसार दक्षिणा दी। त्रेता में महाराज रघु ने एक असमर्थ बटुक कौत्स को उसके गुरु की इच्छानुसार धन के रूप में दक्षिणा देने में सहायता करने के लिये कुबेर पर आक्रमण करने की तैयारी की थी। उस आक्रमण से पूर्व ही कुबेर ने अयोध्या में स्वर्णमुद्राओं की वर्षा कर दी थी। कलियुग में मूलशंकर (महर्षि दयानन्द) ने अपने गुरु बिरजानन्द की इच्छानुसार अपना सारा जीवन वेदों को पुनः महिमामण्डित करने में लगा दिया। गुरु यही दक्षिणा रूप में चाह रहे थे। अतः स्पष्ट है कि भारतीय समाज में अत्यंत प्राचीन काल से आज तक दक्षिणा देने की परम्परा विद्यमान है।
- हिन्दू परिवारों में मांगलिक कार्य हों अथवा कोई अशुभ अवसर हों, दक्षिणा देने की परम्परा है। शुभ अवसर जैसे कथा आदि पर आमंत्रित ब्राह्मणों को भोजनोपरान्त दक्षिणा दी जाती है। इसी प्रकार अशुभ अवसरों जैसे मृत्यु आदि पर भी ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा देने के दृश्य दिखाई देते हैं। वर्ष में एक समय ऐसा भी आता है जब हमें अपने आत्मीय दिवंगतों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। ''संघ के प्रारम्भकाल में स्वयंसेवकों ने श्राद्धों में भोजन के बाद मिली दक्षिणा का धन एकत्रित कर घोष खड़ा किया था, यह उल्लेख मिलता है।''

- संघ ने समाज में प्रचलित इस दक्षिणा परम्परा को एक नया रूप दिया है। व्यक्तिगत उपयोग के स्थान पर राष्ट्रकार्य के लिये आवश्यक धन की व्यवस्था दक्षिणा के धन से करने की परम्परा डाली है। अपने गुरु भगवाध्वज के सामने धन अथवा सम्पूर्ण जीवन दक्षिणा रूप में अर्पित करना स्वयंसेवक अपना कर्तव्य समझता है। पुष्पार्चन से भी भगवाध्वज का पूजन किया जा सकता है। स्वयंसेवक स्वयं उपस्थित होकर दक्षिणा करे, यही विधान है।
- दक्षिणा का सही स्वरूप भी समझना अत्यावश्यक है। दक्षिणा दान नहीं है, दान में अहं भाव रहता है। अपना स्वयं का नाम प्रमुखता से सबके सामने आये, यह इच्छा रहती है। दक्षिणा चन्दा भी नहीं है। चंदा देकर अपने प्रभाव से अपने स्वार्थ की पूर्ति बड़े-बड़े धनवान राजनीतिक दलों से करते हैं, यह सभी को पता है। दक्षिणा संघ का सदस्यता शुल्क भी नहीं है। सदस्यता के लिये शाखा आना मात्र पर्याप्त है। जितना धन सुविधा से अपने पास देने हेतु है, वही भगवाध्वज के समक्ष अर्पित कर दिया तो दक्षिणा के सही भाव को नहीं समझा है, यही माना जायेगा।
- दक्षिणा करने में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रतिदिन अपनी आवश्यकताओं में कटौती कर वर्ष के अंत में इस संग्रहीत धन को दक्षिणा में देना अभीष्ट है। अपने जीवन में प्रतिदिन समर्पण एवं त्याग की वृत्ति व्यावहारिक रूप में प्रकट करने में स्वयंसेवक समर्थ हो, यह अपेक्षा है। दक्षिणा करने पर जीवन में कुछ कष्ट हो, अपनी स्वयं की सुविधायें जुटाने के लिये आवश्यक धन प्राप्त करने में कुछ विलम्ब होता हो तो दक्षिणा की योग्य भावना प्रकट होगी, ऐसा मानना चाहिये। संघ के प्रारम्भ में स्वयंसेवकों ने अपने जेब खर्च से बचाकर तथा स्टेशन पर कुलीगिरी आदि से धन अर्जित कर वर्ष के अंत में संचित धन दक्षिणा रूप में भगवाध्वज

(शेष पृष्ठ 41 पर)

**बौद्धिक कार्यक्रम मूल्यांकन प्रपत्र ( जुलाई, अगस्त, सितम्बर -2018 )**

मुख्य शिक्षक _____ शाखा कार्यवाह _____

शाखा _____ विद्यार्थी/व्यवसायी _____

मंडल/बस्ती _____ खण्ड _____

जनपद _____

| क्र. | कार्यक्रम | अपेक्षित | कितनी बार कराया | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | जुलाई | अगस्त | सितम्बर |
| ❖ | **प्रतिदिन कण्ठस्थः** | | | | |
| 1. | गणगीत | 30 | | | |
| 2. | सुभाषित | 15 | | | |
| 3. | अमृत वचन | 15 | | | |
| ❖ | **सप्ताह में एक दिन ( गुरुवार बौद्धिक दिवस के रूप में रहेगा। )** | | | | |
| 1. | चर्चा | 4 | | | |
| 2. | कथा/कहानी | 4 | | | |
| 3. | प्रार्थना उच्चारण एवं अभ्यास | 4 | | | |
| 4. | सेवा बस्ती में शाखा | 4 | | | |
| ❖ | **मास में एक दिन** | | | | |
| 1. | बौद्धिक वर्ग | 1 | | | |
| 2. | समाचार समीक्षा | 1 | | | |
| 3. | जिज्ञासा समाधान | 1 | | | |
| 4. | गीत, प्रार्थना, एकात्मता स्तोत्र, सुभाषित एवं अमृतवचन का अर्थ | 1 | | | |
| ❖ | **शाखा के अतिरिक्त समय में किये जाने वाले कार्यक्रम** | | | | |
| 1. | शाखा टोली की साप्ताहिक बैठक | 4 | | | |
| 2. | श्रेणी बैठक | 4 | | | |
| | **योग** | | | | |

(कृपया उपरोक्त तालिका को भरकर अपने जिला/प्रान्त केन्द्र पर भेजें।

## दैनिक उपस्थिति प्रपत्र- जुलाई 2018

| दिनांक | बाल | तरुण | प्रौढ़ | योग | अधिकारी प्रवास |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. (रविवार) | | | | | |
| 2. | | | | | |
| 3. | | | | | |
| 4. | | | | | |
| 5. | | | | | |
| 6. | | | | | |
| 7. | | | | | |
| 8.(रविवार) | | | | | |
| 9. | | | | | |
| 10. | | | | | |
| 11. | | | | | |
| 12. | | | | | |
| 13. | | | | | |
| 14. | | | | | |
| 15. (रविवार) | | | | | |
| 16. | | | | | |
| 17. | | | | | |
| 18. | | | | | |
| 19. | | | | | |
| 20. | | | | | |
| 21. | | | | | |
| 22.(रविवार) | | | | | |
| 23. | | | | | |
| 24. | | | | | |
| 25. | | | | | |
| 26. | | | | | |
| 27. | | | | | |
| 28. | | | | | |
| 29.(रविवार) | | | | | |
| 30. | | | | | |
| 31. | | | | | |

प्रवासी कार्यकर्ता जिस शाखा पर जायें, उसकी उपस्थिति अपनी शाखा पुस्तिका में उपस्थिति प्रपत्र पर भरें।
साथ ही साथ मुख्य शिक्षक से उसकी शाखा पुस्तिका के प्रपत्र पर शाखा की उपस्थिति भरवायें ऐसी अपेक्षा है।

## दैनिक उपस्थिति प्रपत्र- अगस्त 2018

| दिनांक | बाल | तरुण | प्रौढ़ | योग | अधिकारी प्रवास |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | | | | | |
| 2. | | | | | |
| 3. | | | | | |
| 4. | | | | | |
| 5. (रविवार) | | | | | |
| 6. | | | | | |
| 7. | | | | | |
| 8. | | | | | |
| 9. | | | | | |
| 10. | | | | | |
| 11. | | | | | |
| 12.(रविवार) | | | | | |
| 13. | | | | | |
| 14. | | | | | |
| 15. | | | | | |
| 16. | | | | | |
| 17. | | | | | |
| 18. | | | | | |
| 19.(रविवार) | | | | | |
| 20. | | | | | |
| 21. | | | | | |
| 22. | | | | | |
| 23. | | | | | |
| 24. | | | | | |
| 25. | | | | | |
| 26.(रविवार) | | | | | |
| 27. | | | | | |
| 28. | | | | | |
| 29. | | | | | |
| 30. | | | | | |
| 31. | | | | | |

प्रवासी कार्यकर्ता जिस शाखा पर जायें, उसकी उपस्थिति अपनी शाखा पुस्तिका में उपस्थिति प्रपत्र पर भरें।
साथ ही साथ मुख्य शिक्षक से उसकी शाखा पुस्तिका के प्रपत्र पर शाखा की उपस्थिति भरवायें ऐसी अपेक्षा है।

## दैनिक उपस्थिति प्रपत्र- सितम्बर 2018

| दिनांक | बाल | तरुण | शिशु | योग | अधिकारी प्रवास |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | | | | | |
| 2. (रविवार) | | | | | |
| 3. | | | | | |
| 4. | | | | | |
| 5. | | | | | |
| 6. | | | | | |
| 7. | | | | | |
| 8. | | | | | |
| 9. (रविवार) | | | | | |
| 10. | | | | | |
| 11. | | | | | |
| 12. | | | | | |
| 13. | | | | | |
| 14. | | | | | |
| 15. | | | | | |
| 16. (रविवार) | | | | | |
| 17. | | | | | |
| 18. | | | | | |
| 19. | | | | | |
| 20. | | | | | |
| 21. | | | | | |
| 22. | | | | | |
| 23. (रविवार) | | | | | |
| 24. | | | | | |
| 25. | | | | | |
| 26. | | | | | |
| 27. | | | | | |
| 28. | | | | | |
| 29. | | | | | |
| 30.(रविवार) | | | | | |

प्रवासी कार्यकर्ता जिस शाखा पर जायें, उसकी उपस्थिति अपनी शाखा पुस्तिका में उपस्थिति प्रपत्र पर भरें। साथ ही साथ मुख्य शिक्षक से उसकी शाखा पुस्तिका के प्रपत्र पर शाखा की उपस्थिति भरवायें ऐसी अपेक्षा है।

**शारीरिक कार्यक्रम मूल्यांकन प्रपत्र जुलाई, अगस्त, सितम्बर -2018**

मुख्य शिक्षक _____ शाखा कार्यवाह _____

शाखा _____ विद्यार्थी/व्यवसायी _____

मंडल/बस्ती _____ खण्ड _____

जनपद _____

| क्र. | कार्यक्रम | | कितनी बार कराया | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | अपेक्षित | जुलाई | अगस्त | सितम्बर |
| ❖ | **अनिवार्य कार्यक्रम :** | | | | |
| 1. | समता | 30 | | | |
| 2. | 13 सूर्यनमस्कार समंत्र | 30 | | | |
| 3. | दण्ड के 25 प्रहार | 30 | | | |
| ❖ | **वैकल्पिक कार्यक्रम : ( विद्यार्थी शाखा के लिये )** | | | | |
| 1. | दण्ड | 4 | | | |
| 2. | नियुद्ध | 4 | | | |
| 3. | पदविन्यास | 4 | | | |
| 4. | योगासन | 4 | | | |
| 5. | कबड्डी/खो-खो | 4 | | | |
| ❖ | **समान कार्यक्रम : ( व्यवसायी शाखाओं के लिये )** | | | | |
| 1. | व्यायाम/सूक्ष्म योग | 4 | | | |
| 2. | आ.ध्यान/योग निंद्रा | 4 | | | |
| ❖ | **अन्य कार्यक्रम :** | | | | |
| 1. | अभ्यास वर्ग | 4 | | | |
| 2. | एकत्रीकरण | 4 | | | |
| | **योग** | | | | |

कृपया उपरोक्त तालिका को भरकर अपने जिला/प्रान्त केन्द्र पर भेजें।

(पृष्ठ 35 का शेष)

के समक्ष अर्पित कर अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित किये हैं। उस समय स्वयंसेवक स्वयं धन अर्जन करने की अवस्था में नहीं थे। आज स्थिति बदली है, अतः उसका ध्यान रखकर इस संबंध में विचार करना वांछित है।

- दक्षिणा का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि संघ कार्य आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी रहे। इस संबंध में किसी भी प्रकार के दबाव में रहकर कार्य करने की स्थिति न बने, यह स्वयंसेवकों का दृष्टिकोण है। संघ कार्य हेतु आवश्यक धन की व्यवस्था स्वयंसेवक स्वयं ही करते हैं। वर्ष में एक बार गुरु पूर्णिमा के मंगलपर्व पर भगवाध्वज का पवित्र भाव से पूजन में दक्षिणा अर्पित कर राष्ट्र हेतु तन, मन, धन से समर्पण एवं त्यागवृत्ति के संस्कारों को वर्षानुवर्ष पुष्ट करते जाते हैं।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूलगामी कार्य मनुष्य निर्माण का है। प्रत्येक स्वयंसेवक में राष्ट्र के लिये सर्वस्व त्याग करने का भाव निर्माण हो। राष्ट्र कार्य को अपने अन्य कार्यों के ऊपर वरीयता देने का मन बने। इसके लिये सतत अभ्यास की आवश्यकता है। लगातार मन पर संस्कार करने से यह सम्भव होता है। दक्षिणा कार्यक्रम भी इसी प्रकार के संस्कार देने के क्रम में एक पग है।

## स्वर्णपदक गुरु दक्षिणा में

प.पू. बालासाहब देवरस प्रारम्भ से ही बड़े मेधावी छात्र थे। उन्होंने दर्शन शास्त्र आदि से स्नातक, तत्पश्चात नागपुर विश्वविद्यालय से विधि स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। ये सभी परीक्षायें उन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अनेक बार उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुए। उन्होंने उन सभी स्वर्ण पदकों से सोना निकालकर उसे संघ की श्री गुरु दक्षिणा में अर्पित कर दिया।

# श्री गुरू दक्षिणा उत्सव हेतु बौद्धिक

**मा. रंगाहरि**

संघ के सभी उत्सव विभिन्न प्रकार के संस्कार देने के लिए हैं, यह हम सब जानते हैं। विजयादशमी का उत्सव विजय की भावना हममें उत्पन्न करने के लिए है। मकर संक्रांति का उत्सव, अपने जीवन में संक्रांति ला सके हैं इसके लिए है। इस प्रकार गुरू पूजन का उत्सव समर्पण-भाव संदेश के लिए है। गुरू पूजा का उत्सव किस प्रकार संघ में विकसित हुआ उसके बारे में आप लोगों के सामने रखना मेरा कर्तव्य है। ऐसा मैं मानता हूँ।

**जीवन में गुरू का महत्व-**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्रीयता एवं हिन्दुत्व के आधार पर कार्य करने वाला एक संगठन है। हिन्दुत्व के नाते जब हम अपने जीवन के बारे में सोचते हैं। तो अपना सम्पूर्ण जीवन हिन्दुत्व से ही प्रभावित है। अब हिन्दू-जीवन में गुरू का महत्व बहुत अधिक है। हम अपनी माँ और पिताजी को देव-समान मानते है। उसके बाद हमें समाज में जो स्थान देते हैं, वह अपना गुरू है। इसलिए प्राथमिक प्रकाश जब माता-पिता देते हैं उसके बाद ज्ञान का प्रकाश दुनिया की जानकारी देने वाले व्यक्ति को हम गुरू कहते हैं। इसलिए माता भी देव-समान हैं। गुरू भी देव समान है। इसलिए अपने उपनिषदों में सर्वप्रथम कहा- मातृ देवो भव, माता देव के समान हो, इसके बाद पित्- देवो भव पिता भी ईश्वर के समान उसके बाद तीसरा शब्द है आचार्यः देवो भव गुरू भी देव के समान है। इसलिए जो हमें पाशविक जीवन से मानवीय जीवन की ओर ले जाते हैं सभी हमारे

देव हैं। इसलिए माता-पिता गुरू तीनों देव समान हैं।

**जीवन में गुरू की आवश्यकता-**

जब गुरू का महत्व देव समान है तो अपनी संस्कृति ने दूसरा भी एक पाठ सिखाया। आदमी कितना भी बड़ा हो गुरू के बिना उसकी शिक्षा सम्पूर्ण नहीं हो पाती। इसलिए हम देखते हैं, साक्षात् श्रीकृष्ण परमात्मा, वे ज्ञान का अधिष्ठाता थे तो भी उनको एक गुरू के यहां जाकर गुरू के चरणों में बैठकर अपनी शिक्षा प्रारम्भ करनी पड़ी और पूर्ण करनी पड़ी। वे स्वयं ज्ञानी थे तो भी संदीपनी महर्षि के आश्रम में जाकर उनको अपना गुरू के नाते उन्होंने स्वीकारा। प्रभु रामचन्द्र जी वह भी त्रिकाल ज्ञानी थे तो भी वशिष्ठ को गुरू के नाते उन्होंने अपनाया। आदमी अत्यन्त महान हो, तो भी गुरू के नाते और एक व्यक्ति के चरणों के पास जाकर विनम्रता से बैठकर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। गुरू के बिना ज्ञान सम्पूर्ण नहीं हो जाता यह अपनी संस्कृति की शिक्षा है। इसलिए परम पूज्यनीय डॉ0 साहब ने भी जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शुरू किया तो स्वावलम्बन के आधार पर शुरू किया। संघ का एक प्रसिद्ध वाक्य है स्वयंमेव मृगेन्द्रता। हम दूसरों की वैशाखी पर चलना नहीं चाहते है स्वावलम्बी जीवन। इस प्रकार संगठन चलाना चाहते हैं यह डॉ0 जी का विचार था तो भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिन्दुत्व का आधार का संगठन होने के कारण संघ के सामने एक गुरू चाहिये।

**व्यक्ति नहीं आदर्श गुरू-**

संघ के सामने गुरू कौन चाहिये? डॉक्टर जी का चिन्तन अत्यन्त गहरा था। एक-एक बिन्दु के बारे में बार-बार गहराई से वह सोचा करते थे इसलिए डॉ0 जी ने सोचा संघ का गुरू कौन हो

सकता है? उन्होंने सोचा स्वयंसेवकों के सामने एक आदर्श ही गुरू होना चाहिये। लक्ष्य ही गुरू होना चाहिये। साथ ही साथ डॉ0 जी ने और एक बात सोची। व्यक्ति तो अच्छे हो सकते है परन्तु व्यक्तियों में मर्यादा है। व्यक्ति नश्वर है। आज उसका जन्म है कल उसकी मृत्यु। त्रुटियाँ व्यक्ति द्वारा हो सकती है। यह दूसरा विचार और तीसरा व्यक्ति आखिर तक, अन्त तक एक पथ पर चलेगा उसका भरोसा क्या है। इसलिए व्यक्ति परिवर्तनीय है इसलिए एक व्यक्ति को जब हमने गुरू के नाते रखा तब शायद जिन्होंने उनको गुरू माना उनका मन इधर- उधर जा सकता है।

**अपना आदर्श**- अब कौन सा आदर्श अपना आदर्श है। यह भारतवर्ष हिन्दू राष्ट्र है। इसका प्राण हिन्दुत्व है और हिन्दुत्व के आधार पर ही अपने भविष्य के जीवन की रचना करनी चाहिये। इस प्रकार उन्होंने सोचा और संघ का आदर्श ही संघ का गुरू है। इसके बारे में डॉ0 जी ने सोचा।

**अपना गुरू भगवा ही क्यों?-**

हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में भगवाध्वज को गुरू मानते हैं। सम्पूर्ण इतिहास का प्रतिनिधि है। सम्पूर्ण महात्माओं की मालिका का निचोड़ है इसीलिए भगवाध्वज की आराधना करते समय हम सभी महात्माओं की साधना-आराधना करते हैं उनकी पूजा करते हैं उनके आदर्श को स्वीकारते हैं। इसीलिए परमपूजनीय डॉ0 जी ने यह निराकार आदर्श को साकार करके अपने सामने भगवाध्वज को गुरू के नाते रखा। अब ये भगवाध्वज अपने पूर्वजों ने क्यों स्वीकार किया। केवल रंग के कारण किया क्या? रंग में बहुत अधिक आकर्षण है इसीलिए स्वीकार किया क्या? उसके अच्छे-अच्छे

उद्देश्य है। अपने समाज का प्रतीक है। समाज का स्वभाव क्या है? समाज की पहचान क्या है समाज की प्रकृति क्या है? उसी प्रकार का होना चाहिये अपना प्रतीक। अब राष्ट्र की प्रकृति क्या है? भारत राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र इसको हम कहते हैं, मानते हैं। वो अनादि है इसीलिए अनादि राष्ट्र का प्रतीक भी अनादि जिसका प्रारम्भ नहीं, आदि नहीं अनादि चाहिये। भारत राष्ट्र का कब जन्म हुआ? उसको कोई नहीं जानता। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि बहुत बड़ा इतिहासकार भी अगर खोज करता है तो भी भारत का उदय कब हुआ यह नहीं जान सकता इसीलिए भारत राष्ट्र को उन्होंने कहा अनादि। अब इस अनादि राष्ट्र का प्रतीक भी अनादि होना चाहिये और भगवा ध्वज का प्रारम्भ कब हुआ हम जानते हैं क्या वो अनादि है जैसा राष्ट्र अनादि उसी प्रकार ध्वज भी अनादि। भारत राष्ट्र किस पुरूष के द्वारा स्थापित हुआ हम नहीं जानते है इसीलिए भारत राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र अपौरूषेय है। किस पुरूष ने भारत राष्ट्र की संस्थापना की कोई भी इतिहासकार नहीं बता सकता है। भारत राष्ट्र अपौरूषेय है। उसका प्रतीक भगवाध्वज भी अपौरूषेय है। भारत राष्ट्र का लक्ष्य चिरन्तन है और राष्ट्र के प्रतीक यानि भगवा ध्वज का लक्ष्य भी चिरन्तन है।

**संघ में गुरू दक्षिणा उत्सव क्यों-** डॉ0 जी ने इसके बारे में भी सोचा था। संघ के प्रारम्भिक दिनों में परमपूजनीय डॉ0 जी को 2-3 सालों में संघ चलाने के लिए पैसों की आवश्यकता थी इसीलिए वो स्वयं लोगों के पास जाकर जिनसे बहुत अच्छा परिचय था उनका उनसे वो पैसा लेते थे परन्तु वो जानते थे ये एक अस्थायी व्यवस्था है ये आखिर तक नहीं चलनी चाहिये क्योंकि एक संगठन का प्राण उसी के अन्दर रहना चाहिये। कार्यकर्ता संघ के अन्दर के

परन्तु कार्यकर्ता के लिए कार्य बढ़ाने के लिए जो धन चाहिये उसका स्रोत संघ के बाहर यह भविष्य में कमजोरी ला सकती है। इसीलिए धन का केन्द्र भी संगठन के अन्दर ही होना चाहिये हम संगठन में काम करने वाले भी संगठन के अन्दर ही होने चाहिये जैसा मैंने शुरू में कहा - दूसरों की वैशाखी पर चलना एक सक्षम संगठन को शोभा नहीं देता और सक्षम संगठन को भविष्य में कमजोर होने की संभावना है। इसीलिए डॉ0 जी ने दो बातें अपने सामने रखी। एक संगठन अत्यन्त व्यापक बनाने के लिए अत्यन्त प्रभावी ताकत वाला बनाने के लिए और भविष्य में भी यह संगठन चलाने की क्षमता संगठन के अन्दर ही रहनी चाहिये। इस प्रकार हम कहते हैं कि स्वयं चालक शक्ति संगठन के अन्दर ही होनी चाहिये।

**प्रतिबद्धित जन-धन शक्ति-**

इसीलिए उन्होंने दो बातों पर जोर दिया एक है Committed Man Power प्रतिबद्धित जन शक्ति चाहिये। संगठन के लिए ही काम करने वाले एक ही धुन इस प्रकार सोचने वाले लोग अपने को चाहिये। आजकल अंग्रेजी में और एक शब्द है वो क्या। Armchair Politician, Armchair Official कुर्सी पर बैठकर काम करने वाला Armchair इस प्रकार आराम कुर्सी पर बैठकर काम करने वाले लोग है। उस प्रकार के लोगों के द्वारा संगठन खड़ा कर सकते है क्या? संगठन उस प्रकार के लोगों द्वारा संभव नहीं इसलिए Committed Man प्रतिबद्धित जन शक्ति चाहिये। जो संगठन के लिए ही जियेंगे। संगठन के लिए ही सोयेंगे। सोने में, संगठन, जागरण में संगठन। संगठन, संगठन एक ही धुन। इस प्रकार के प्रतिबद्धित लोगों की शक्ति चाहिये न. 1, उन्होंने कहा Committed Man Power

चाहिये साथ ही साथ Committed Man Power को Committed काम करने को Committed Money Power चाहिये। इसीलिए प्रतिबद्धित जन शक्ति को काम करने को प्रतिबद्धित धन शक्ति चाहिये। उसका केन्द्र भी संगठन के अन्दर ही होना चाहिये।

**दक्षिणा और अन्य पद्धति में अन्तर**–

उसमें से निकला यह गुरू दक्षिणा का भाव। यह दक्षिणा उसका भाषान्तर अंग्रेजी भाषा में नहीं पैसा कमाने का प्रयोग जिसे हम कहते है तरह-तरह के कितने है। एक है Donation जो चन्दा देते हैं लोग। दूसरा है Subscription और तीसरा है दान। दान देते है। चन्दा देते है, ग्राहक संख्या देते है। इसमें डॉ0 साहब ने कमियां देखी। संघ में जो आना चाहता है आइये। संघ का सदस्य बनने के लिए संघ में आना चाहिये और Committed होना चाहिये। इसलिए यहां ग्राहक संख्या नहीं और दान भी क्या होता है कभी-कभी टालने के लिए वह देते हैं। केरल में Donation के लिए शब्द क्या है। हिन्दी में जो संभावना Possibility के लिए कहते हैं। दान अच्छा है परन्तु दान देते समय व्यक्ति का पुण्य भाव अपने अन्दर होता है। जब दान देता है इसका पुण्य मुझे मिलना चाहिये। संघ का कार्यकर्ता ही संघ का उपकर्ता और संघ का उपकर्ता ही संघ का कार्यकर्ता। दोनों का संगम होना चाहिये। वो दान से नहीं होता तब दान भी संघ के दृष्टिकोण में अपर्याप्त। तब हम किस प्रकार यह Committed Money Power प्रतिबद्धित धनशक्ति खड़ा करेंगे- डॉ0 जी ने सोचा। तब डॉ0 जी के मन में आया अपनी प्राचीन संस्कृति में उसके लिए भी एक उत्तर है दक्षिणा। दक्षिणा भगवान के सामने चढ़ाते समय वो दान है क्या। भगवान को हम दान देते हैं? क्या उसको इस प्रकार हम कहेंगे क्या? भगवान को Donation दे सकते हैं क्या? भगवान का भक्त बनाने के लिए

Subscription चन्दा यह भी कह सकते हैं क्या? परन्तु भगवान के सामने हम दक्षिणा चढ़ाते हैं।

**दक्षिणा का महत्व-** इस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यह सम्पूर्ण गुरू पूजा का विकास इस प्रकार हुआ। स्वयंसेवक को सोचना चाहिये और इसकी श्रेष्ठता कैसी है? कभी-कभी यह सिखाने के लिए भगवान हमारे सामने भिन्न-भिन्न प्रकार के अवसर रख देते हैं। संघ के जीवन में द्वितीय प्रतिबन्ध अत्यन्त कठोर था। पहला प्रतिबन्ध तो था ही कठोर परन्तु उससे भी कठोरतरम था द्वितीय प्रतिबन्ध। संघ में गुरू दक्षिणा तो छोटी है लगता है आना है प्रणाम करना और देना परन्तु कितना Committed है हम यह देखते है। आज हममें से बहुत स्वयंसेवक गुरूदक्षिणा करते है। उस समय मेरी नजर में एक पुराना स्वयंसेवक ठीक प्रकार देख नहीं सकता परन्तु और एक स्वयंसेवक का सहारा लेकर धीरे-धीरे मंद गति से आगे बढ़ते-बढ़ते शायद ध्वज को उन्होंने नहीं देखा परन्तु ध्वज कहां है वह जानता था। प्रणाम किया, गुरूदक्षिणा किया। इसको कहते है Committed Man Power प्रतिबद्धित जन शक्ति। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बहुत बड़ी धन, सम्पत्ति है। यह है अब Committed Man Power का मणि कंचन योग उसको हम कहते हैं गुरू दक्षिणा, जिसके द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वावलम्बी स्वयंचालन कर सकता है। इसीलिए आज गुरू दक्षिणा का महत्व क्या है? गुरू पूजा का महत्व क्या है? गुरू का महत्व क्या है? जो विचार मेरे मन में आ गये आप लोगों के सामने मैंने रख दिये हैं। आप सब पुराने स्वयंसेवक है नयी बात नहीं कहनी आपके सामने। इसलिए जितना सारा आप जानते हैं उसकी पुनरावृत्ति मैंने की और इतना ही कहकर मैं अपना विचार यहां समाप्त कर रहा हूं। सब लोगों को मेरा एक बार फिर विनम्र नमस्कार।

# रक्षाबन्धन उत्सव

## अमृत वचन

**प.पू. श्रीगुरुजी ने कहा-** 'रक्षाबन्धन के पवित्र पर्व पर, मन में निश्चय करें, कि स्नेह की सच्ची अनुभूति लेकर, कंधे से कंधा मिलाकर, अपने वास्तविक बन्धुत्व का भाव उत्पन्न कर, शुद्ध पवित्र एकात्मक जीवन उत्पन्न करेंगे। यही आज के पुण्य पर्व पर अपने लिये आह्वान तथा संदेश है।''

## एकलगीत

हिन्दू-हिन्दू हम बन्धु-बन्धु हैं, बिन्दु-बिन्दु हम महासिन्धु हैं।
हम अक्षयवट तरु विशाल हैं, सत्य सनातन चिर त्रिकाल हैं,
वैष्णव, शैव, शाक्त, सिख शाखा, बौद्ध, जैन हम विविध प्रशाखा।
हम अनेक में एक हिन्दू हैं।।
हिन्दू...।।1।।

हम न अवर्ण, सवर्ण कभी हैं, नही वैश्य ब्राह्मण क्षत्रिय हैं,
हम न शूद्र हरिजन वनवासी, हम केवल हिन्दू अविनाशी।
हम विराट मानव स्वयंभू हैं।
हिन्दू...।।2।।

यहाँ न कोई द्रविण आर्य है, कोई न आदिम नहीं अनार्य हैं
ऊँच-नीच हम नहीं जानते, अगला-पिछड़ा नहीं मानते।
हम समग्र निर्दोष इन्दु हैं।
हिन्दू....।।3।।

# विचारणीय बिन्दु

- रक्षाबन्धन उत्सव इस बार 26 अगस्त 2018 को है। सम्पूर्ण भारत में पूरा हिन्दू समाज यह पर्व अति उत्साह एवं आनन्द से मनाता है। प्रमुख रूप से बहिनें भाइयों को राखी बांधती हैं। भाई इसके उपलक्ष्य में बहन को कुछ धन देता है। उपरोक्त परम्परा सामान्यतः समाज में प्रचलित हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिन्दू समाज के इस गौरवशाली एवं भावनाप्रधान पर्व को व्यक्तिगत स्तर के स्थान पर सामाजिक स्तर पर मनाने की परम्परा डाली है। स्वयंसेवक समाज के उन बन्धुओं से इस पर्व पर सम्पर्क करते हैं, जो दुर्भाग्य से अपने समाज के बहुत दिनों से बिछुड़े रहे हैं। राखी बांधते हुए वे गीत गाते हैं-

**संगठन सूत्र में मचल-मचल, हम आज पुनः बँधते जाते।**
**माँ के खण्डित-मण्डित मन्दिर, का शिलान्यास करते जाते॥**

- इस दिन ब्राह्मण भी अपने यजमानों के घर जाकर राखी बाँधते हैं। यजमान भी प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मण को सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा देते हैं। ब्राह्मण यजमान की कलाई में राखी बाँधते हुए निम्न श्लोक पढ़ते हैं-

**येन बद्धो बलिराजा, दानवेन्द्रो महाबलः।**
**तेन त्वां अनुबध्नामि रक्षे, मा चल मा चलः॥**

- रक्षाबन्धन की प्रक्रिया अपने देश में कब प्रारम्भ हुई है, यह भी विचारणीय है। अपने संस्कृत वाङमय में शाची अर्थात् इन्द्राणी द्वारा इन्द्र के हाथ में रक्षासूत्र बाँधने की घटना आती है। यह देवासुर संग्राम के समय की बात है। देवताओं की राक्षसों से बार-बार हार होने के कारण इन्द्र की कलाई में उनकी रक्षा की इच्छा से यह सूत्र बन्धन का प्रथम प्रसंग हैं देवताओं का नेतृत्व इन्द्र कर रहे थे। अतः उनकी रक्षा और विजय की कामना ही इस रक्षा बन्धन का उद्देश्य रहा। दूसरा

रक्षाबन्धन का अवसर भगवान विष्णु द्वारा बावन अंगुलि का शरीर लेकर राजा बलि से सभी कुछ दान में प्राप्त करने से संबंधित है। राजा बलि के साम्राज्यवाद से पृथ्वी को मुक्त रखने के लिये वामनावतार ने उसके हाथ में रक्षासूत्र बांधा था। उसे अपने लोक में आबद्ध कर उसकी रक्षा का भी वचन दिया था। ब्राह्मण द्वारा यजमान को राखी बांधते समय बोले हुए श्लोक द्वारा इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है।

- रक्षाबन्धन पर्व का महत्व बहुआयामी है। इस अवसर पर व्यक्ति-व्यक्ति में सुखद अनुभूति के साथ-साथ व्यापक सन्दर्भ में रक्षा की आवश्यकता का भी ध्यान होना स्वाभाविक है। पर्व के नाम से रक्षा की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश पड़ता है। रक्षा किस की करनी या होनी है? और रक्षा कौन करेगा? या किसे करनी चाहिये? आदि प्रश्न भी महत्व के हो जाते हैं। रक्षा सम्बन्धी सभी प्रश्न देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार ही विचार करने योग्य होते हैं। इस संबंध में शास्त्र-शुद्ध सम्यक् विवेचन कर वस्तुस्थिति समझना ही आवश्यक है। अतः इस संबंध में सतत जागरुकता की आवश्यकता है। कहा भी है, सतत् जागरुकता ही स्वातंत्र्य का मूल्य है। इस प्रकार की स्थिति में रक्षा किसकी करनी है, यह समझना चाहिये।
- व्यक्ति और राष्ट्र आत्मरक्षार्थ अनेक उपाय करते हैं। व्यक्ति शस्त्र का अवलम्बन लेता है। अन्य उपाय भी करता है। राष्ट्र भी उसी प्रकार आन्तरिक सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस और बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से सेना का प्रयोग करता है। शत्रुओं तथा दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों से राष्ट्र तथा उसके घटकों को हानि से बचाने के लिये गुप्तचरों का भी प्रयोग होता है। आसन्न संकट की पूर्व जानकारी उन संकटों को सफलतापूर्वक निरस्त करने में सहायक होती है।
- आत्मरक्षा तो स्वाभाविक है परन्तु शरणागत को भी सभी प्रकार की सुरक्षा प्रदान करने का मानव का स्वभाव है। व्यक्तियों का सामूहिक मन राष्ट्र रूप में यह कार्य करता है। शरणागत कपोत की रक्षा राजा

शिवि ने अपने शरीर का माँस काटकर की थी। राजा दिलीप ने गौ रक्षार्थ स्वयं का जीवन बलिदान करने की तत्परता प्रकट की थी। इसी प्रकार पारसी, यहूदी आदि इस देश में शरण पाने की इच्छा से आये। वे शरणागत होने से सभी प्रकार की सुरक्षा के पात्र समझे गये। उन्हें अपना कुछ भी खोना नहीं पड़ा। उनकी अपनी धार्मिक मान्यतायें, पूजापद्धति तथा सामाजिक परम्पराओं को सुचारू रूप से अक्षुण्ण रखा गया। उदात्त मानवीय गुण, सदभावना, उदारता, प्रेम, परदुःखकातरता, सहानुभूति आदि ही इस प्रकार रक्षा की भावना को प्रेरित करती है।

- देश, काल, परिस्थिति के अनुसार राष्ट्र की रक्षा के स्वरूप, विचार और प्रक्रिया में बदल आता रहता है। एक समय था कि नारी का सम्मान एवं सतीत्व संकट में था। माताओं और बहनों ने अपने सम्मान की रक्षा के लिये जौहर किये। राजस्थान के इतिहास में 'साका' प्रसिद्ध है। देश के विभाजन के समय भी हिन्दू नारियों ने अनेक स्थानों पर जौहर का इतिहास दुहराया था। नारियों ने रक्षा की इच्छा से अपने से अधिक सबल हाथों में राखी बाँधकर रक्षा करने का ध्यान दिलाना प्रारम्भ किया। आज वह बहन द्वारा भाई को रक्षाबन्धन पर राखी बांधने से याद आता है। एक ऐसे ही कालखण्ड में ब्राह्मण आतताइयों और आक्रमणकारियों के लक्ष्य बने। उनकी रक्षा का प्रसंग आया। उनकी रक्षा के प्रबन्ध किये गये। ब्राह्मण का यजमान को राखी बांधना उसी परम्परा को स्मरण कराता है।
- मूल प्रश्न है कि रक्षाबन्धन के संदेश को कैसे समझा जाये? रक्षाबन्धन पर्व का रक्षा के प्रश्नों से जुड़ा होने से हमें अपनी प्राथमिकतायें पहले ही निश्चित करनी पड़ेगी। संकट के बादल सदैव आते-जाते रहते हैं। हमें संकट के स्वरूप की सही पहचान कर उसे निष्प्रभावी बनाने की अपनी सिद्धता प्रकट करनी होगी। अर्न्तवाह्य संकट समय-समय पर

हमें घेरेंगें हमें उन्हें ठीक से पहचानना है। संकट स्पष्ट दिखाई देता है, परन्तु कभी-कभी छद्म वेश में आता है। मित्रता का चोला पहनकर, भाई बनकर और कभी आत्मीय बनकर संकट लाने वाले अनुभव आयेंगे। हमारे अपने ही रक्त के व्यक्ति या व्यक्ति समूह हमारे लिये संकट का कारण बने हैं, आज भी हैं और आगे भी होंगे। जयचंदों की कमी नहीं है प्रलोभन और व्यक्तिगत द्वेष के कारण शक्तिसिंह (महाराणा प्रताप के भाई) जैसे पराक्रमी लोग शत्रुओं से मिलते दिखाई देंगे। मिर्जा राजा जय सिंह और राजा मानसिंह जैसे शत्रुओं की ओर से लड़ने के लिये उद्धत होंगे, शत्रु की पैरवी करेंगे, हमें इनसे सावधान रहना है। ये सबसे बड़े शत्रु हैं, जिनसे देश की रक्षा करनी है।

- रक्षा का प्रश्न भावनात्मक धरातल पर भी उत्पन्न होता है। इसका क्षेत्र विस्तृत व बहुआयामी है। समाज को अपने मूल से काटकर भावना-शून्य बनाकर वैचारिक स्तर पर आधार समाप्त करना ही इसका काम नहीं है, वरन् अपनी मान्यताओं, जीवन मूल्यों एवं जीवन आदर्शों से सतत् दूर कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आत्मविस्मृति और आत्मग्लानि पैदा करना है। क्या हमने देखा नहीं कि रामजन्मभूमि आंदोलन के समय बाबरी ढाँचा टूटने पर अपने ही समाज के व्यक्ति ने गोलियाँ चलवाई थी। अयोध्या में राम मंदिर बनाने में आज भी विरोध के स्वर फूट पड़ते हैं ये स्वर भी अपने ही समाज के लोगों के हैं ये आत्मविस्मृति और आत्मग्लानि के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हमें ऐसे लोगों से समाज की रक्षा करनी है।
- हमें रक्षा के और क्षेत्र भी ध्यान में रखने हैं -
- अ) इस देश में बहुत दिनों से हिन्दू होना अपराध माना जाता रहा है। हिन्दू हित के कार्य को साम्प्रदायिक कहने की परम्परा सी बन गई है। अपने को हिन्दू कहने में लाज आती है। यह पतन की ओर बढ़ने का कैसा करुणाजनक दृश्य है? विवेकानन्द का उद्घोष 'गर्व से कहो हम

**(शेष पृष्ठ 56 पर)**

# भारत विभाजन की पृष्ठभूमि और अखण्ड भारत की संकल्पना तत्कालीन परिस्थिति

- 1857 के स्वातन्त्र्य समर में अपेक्षित सफलता नहीं मिली अतः कुछ वर्षों तक देश में निराशा छायी रही।
- 1885 में अंग्रेजों ने सेफ्टी बाल्ब के रूप में कांग्रेस की स्थापना की।
- बांटो और राज करो की नीति के अन्तर्गत मुसलमानों को अलग से खड़ा करने की योजना की।
- एंग्लो मोहम्मडन ओरियन्टल स्कूल की अलीगढ़ में स्थापना, आगे चलकर यही स्कूल पृथकतावादी मुस्लिम तैयार करने वाला ''अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय'' आज भी मुस्लिम अलगाववादी गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है।
- देश बांटने की योजना के पूर्वाभ्यास के रूप में 1905 में बंग-भंग।
- अंग्रेजों की प्रेरणा से 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसके बाद तुष्टिकरण प्रारम्भ हुआ 'चित्र, राष्ट्रगीत, ध्वज, भाषा आदि के आग्रह छूटते गये।
- मुस्लिम लीग द्वारा 1940 में पाकिस्तान के निर्माण का प्रस्ताव।
- धीरे-धीरे कांग्रेस नेतृत्व झुकता गया। मुस्लिम नेता अकड़ते चले गये। एक-एक कर मुस्लिम लीग की सभी मांगों को मानते गये।
- 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के प्रति साम्यवादियों का विरोध।
- मुस्लिम-अंग्रेज मिलकर भारत तोड़ने में संलिप्त थे।
- 1946 में डाइरेक्ट एक्शन (इसमें मुसलमानों ने हिन्दुओं का कत्लेआम किया) कलकत्ता में ही मरने वालों की संख्या प्लासी की लड़ाई में मरने वालों की संख्या से कहीं अधिक थी।
- **देश विभाजन के कारण**
- 1- हिन्दू समाज के विभिन्न दोष, 2- धर्मान्तरण, 3- धर्मान्तरित लोगों को पुनः हिन्दू न बनाना, 4- दुश्मन की चालों को न समझना।

5- फूट डालो-राज करो की अंग्रेजों की नीति। 6- कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति। 7- हिन्दू उदासीनता। 8- थका-हारा सत्ता लोलुप नेतृत्व आदि।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. लोहिया अखण्ड भारत के समर्थक। 1964 में सामूहिक विज्ञप्ति दी।
- यूरोप के देश आज परस्पर साक्षा बाजार बना रहे हैं जर्मनी, वियतनाम आदि का विभाजन समाप्त। हृदय में इच्छा शक्ति की आवश्यकता। पहल कौन करें? जिसकी हानि हुई है। सीता का अपहरण पहल राम को ही करनी पड़ी। जिन्हें कुछ खोने की पीड़ा है पहल वे ही करेंगे। गांधी, पटेल, खान अब्दुल गफ्फर खाँ आदि सभी अखण्ड भारत के पक्षधर थे।
- पूजा के लिये अखण्ड मूर्ति की आवश्यकता।
- भारत केवल भूखण्ड नहीं अपितु साक्षात् जीवन्त माता का स्वरूप, वात्सल्यमयी मातृभूमि, इसी स्वरूप को संघ की प्रार्थना में प्रतिदिन नमस्कार।
- महर्षि अरविन्द आदि किसी को भी खण्डित भारत स्वीकार नहीं रहा। महात्मा गांधी ने भी यही कहा था कि देश का विभाजन मेरी लाश पर होगा।
- भारत के किसी भी सपूत को वात्सल्यमयी माता का अंग-भंग स्वीकार नहीं।
- हमारे अनेक श्रद्धा केन्द्र व तीर्थ स्थान आज पाकिस्तान व बांग्लादेश में है। उनके बिना आज भी अधूरापन।
- विभाजन राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक और भावात्मक दृष्टियों से अनुपयुक्त।
- आर्थिक दृष्टि से भी समूचा अखण्ड भारत एक ईकाई। कपास उत्पादन उधर-मिल इधर। जनसंख्या इधर धान्य उधर। एक ईकाई बनने पर भारत पुनः सोने की चिड़िया बन सकता है।

- पाकिस्तान का निर्माण स्वतंत्र भारत पर किया गया विदेशी आक्रमण है। जैसे- हमने गोवा व हैदराबाद को मुक्त कराया वैसे ही पाकिस्तान को मुक्त कराना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। (पं. दीनदयाल जी)।
- नैसर्गिक दृष्टि से भारत एक पूर्ण इकाई, ऊपर हिमालय नीचे महासागर। अखण्ड भारत एक नैसर्गिक सत्य है। यह हमारी श्रद्धा और आस्था का विषय है। उपाय केवल युद्ध नहीं- अन्यान्य नीतियाँ। अखण्डता के उदाहरण- जर्मनी, वियतनाम, आयरलैण्ड में आंदोलन। जैसे- पाकिस्तान मोहनजोदड़ो की सभ्यता को अपनी सभ्यता मानता है, हम भी अपनी सभ्यता मानते हैं, पाणिनी को दोनों देश महापुरुष मानते हैं। ऐसी अनेक बातें अखण्ड भारत निर्माण में सहायक।

---

**( पृष्ठ 53 का शेष )**

हिन्दू हैं'' जन-जन का उद्घोष बनाने के लिये हमें प्रयास करना है। हमें अपने हिन्दूपन की रक्षा भी करनी है।

- ब) इस देश में वन्देमातरम् कहने पर आपत्ति होती है। माँ सरस्वती के पूजन का विरोध किया जाता है, इसे भी हम मूक होकर देखते रहते हैं। हमें अब जागना है। अपनी मातृभूमि की वन्दना करने का अपना अधिकार सुरक्षित करना है। हम अपने ही देश में अपनी माता का पूजन न कर सकें, यह नहीं होने देंगे।
- स) इसी के साथ अपने देवी-देवताओं, महापुरुषों, राष्ट्रनायकों, आदर्शों, प्रेरणास्रोतों, सांस्कृतिक अमूल्य निधियों आदि के प्रति अपनी दृढ़ता, श्रद्धा को बनाये रखते हुए उन पर होने वाले आक्रमणों से भी इन सभी की रक्षा करनी है।
- द) जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा के संदर्भ में भी विचार करना है। आज रक्षाबन्धन पर्व का यही संदेश है।

# सेवा विभाग

## अपना घर सेवा केन्द्र कैसे बने

- निरपेक्ष भाव से-आत्मीयता, स्नेह, प्रेम, भगवान, पूजा- इन सभी बातों का दृश्य स्वरूप याने अपना घर।
- स्नेह और प्रेम भाव से जुड़ने के कारण ही उसे परिवार कहा जाता है।
- घर का स्थान बस्ती में-गाँव में समाज में होता है।
- समाज सुखी रहे, समाज के सुख में व्यक्ति का सुख होता है यही अपनी परम्परा है।
- वर्तमान में इस प्रकार का भाव समाज में कम दिखाई देता है।
- अपने घर से ऐसा भाव निर्माण हो ऐसा प्रयत्न करना।
- घर के सामने तुलसी वृंदावन हो, हर रोज उसकी पूजा हो।
- महापुरुषों की तस्वीर लगाने से परिवार की मानसिकता समाज के ध्यान में आती है।
- घर में प्रतिदिन या साप्ताहिक सत्संग/पुस्तक पठन कार्यक्रम हो।
- मास में एक बार वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा हो।
- बस्ती की गाँव की समस्याएं हल करने का प्रयास हो।

# एकात्मता स्तोत्र

ॐ सच्चिदानन्दरूपाय नमोऽस्तु परमात्मने।
ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमाङ्गल्यमूर्तये ।।1।।

प्रकृतिः पञ्च भूतानि ग्रहा लोका स्वरास्तथा।
दिशः कालश्च सर्वेषां सदा कुर्वन्तु मङ्गलम् ।।2।।

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्।
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ।।3।।

महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः ।
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ।।4।।

गङ्गा सरस्वती सिन्धुर्ब्रह्मपुत्रश्चगण्डकी ।
कावेरी यमुना रेवा कृष्णा गोदा महानदी ।।5।।

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चि अवन्तिका ।
वैशाली द्वारिका ध्येया पुरी तक्षशिला गया ।।6।।

प्रयागः पाटलीपुत्रं विजयानगरं महत् ।
इन्द्रप्रस्थं सोमनाथः तथाऽमृतसरः प्रियम् ।।7।।

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा ।
रामायणं भारतं च गीता सद्दर्शनानि च ।।8।।

जैनागमास्त्रिपिटका गुरुग्रंथः सतां गिरः ।
एषः ज्ञाननिधिः श्रेष्ठः श्रद्धेयो हृदि सर्वदा ।।9।।

अरुन्धत्यनसूया च सावित्री जानकी सती ।
द्रौपदी कण्णगी गार्गी मीरा दुर्गावती तथा ।।10।।

लक्ष्मीरहल्या चेन्नम्मा रुद्रमाम्बा सुविक्रमा ।
निवेदिता सारदा च प्रणम्या मातृदेवताः ।।11।।

# प्रार्थना

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे
त्वया हिन्दुभूमे सुखवँ् वर्धितोऽहम् ।
महामंङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे।
पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते ।।1।।
प्रभो शक्तिमन् हिन्दुराष्ट्राङ्गभूता।
इमे सादरन् त्वान् नमामो वयम् ।।
त्वदीयाय कार्याय बद्धा कटीयम् ।
शुभामाशिषन् देहि तत्पूर्तये।।
अजय्याञ्च विश्वस्य देहीश शक्तिम्।
सुशीलञ् जगद्येन नम्रम भवेत् ।।
श्रुतञ्च चैव यत् कण्टकाकीर्णमार्गम् ।
स्वयम् स्वीकृतन् नस् सुगङ्कारयेत्।।2।।
समुत्कर्ष निश्श्रेयसस्यैकमुग्रम्
परम् साधनन् नाम वीरव्रतम् ।।
तदन्तस् स्फुरत्वक्षया ध्येयनिष्ठा
हृदन्तः प्रजागर्तु तीव्राऽनिशम् ।।
विजेत्री च नस् संहता कार्यशक्तिर्
विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्।।
परवँ् वैभवन् नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम् ।
समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम् ।।3।।
।। भारत माता की जय ।।

# भावार्थ

हे वत्सल मातृभूमि! मैं तुझे निरन्तर प्रणाम करता हूँ। हे हिन्दुभूमि! तूने ही मुझे सुखपूर्वक बढ़ाया है। हे महामंगलमयी पुण्यभूमि! तेरे लिये मेरा यह शरीर अर्पित हो। मैं तुझे अनन्त बार प्रणाम करता हूँ।।1।।

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, ये हम हिन्दुराष्ट्र के अंगभूत घटक, तुझे आदरपूर्वक प्रणाम करते हैं। तेरे ही कार्य के लिये हमने अपनी कमर कसी है। उसकी पूर्ति के लिये हमें शुभ आशीर्वाद दो। विश्व के लिये जो अजेय हो ऐसी शक्ति, सारा जगत् जिससे विनम्र हो ऐसा विशुद्ध शील तथा बुद्धिपूर्वक स्वयं स्वीकृत हमारे कण्टकमय मार्ग को सुगम करे, ऐसा ज्ञान भी हमें दो।।2।।

अभ्युदय सहित निःश्रेयस की प्राप्ति का वीरव्रत नामक जो एकमेव, श्रेष्ठ, उग्र साधन है, उसका हम लोगों के अन्तःकरण में स्फुरण हो। हमारे हृदय में अक्षय तथा तीव्र ध्येयनिष्ठा सदैव जाग्रत रहे। तेरे आशीर्वाद से हमारी विजयशालिनी संगठित कार्यशक्ति स्वधर्म का रक्षण कर अपने इस राष्ट्र को परम वैभव की स्थिति पर ले जाने में अतीव समर्थ हो।।3।।

।। भारत माता की जय ।।

## एकात्मता-मन्त्र

यं वैदिका मन्त्रदृशः पुराणा, इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः।
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकं, यं ब्रह्मशब्देन विनिर्दिशन्ति ।।1।।
शैवा यमीशं शिव इत्यवोचन् , यं वैष्णवा विष्णुरिति स्तुवन्ति ।
बुद्धस्तथाऽर्हन्निति बौद्धजैनाः, सत् श्री अकालेति च सिक्ख सन्तः।।2।।
शास्तेति केचित् प्रकृतिः कुमारः, स्वामीति, मातेति, पितेति भक्तया।
यं प्रार्थयन्ते जगदीशितारं, स एक एव प्रभुरद्वितीयः ।।3।।

# शारीरिक विभाग के कार्यक्रम एवं अपेक्षाएँ

- जिला खंड व नगर केन्द्र स्तर तक शारीरिक शिक्षण प्रमुख की नियुक्ति।
- जिला की शारीरिक टोली गठित हो व सक्रिय हो।
- महानगर/जिला केन्द्र व प्रत्येक घोष केन्द्र स्तर तक घोष प्रमुख की नियुक्ति हो।
- जिला शारीरिक टोली की वर्ष में कम से कम 3 बार बैठक अपेक्षित। मास में एक बार अभ्यास वर्ग प्रत्येक बैठक के कम से कम 4 सत्र हों।
- जिला शारीरिक शिक्षण प्रमुख का वर्ष में 1 बार सभी नगरों व खण्डों तक प्रवास करना अपेक्षित है।
- जिले की बैठकों की कार्यवाही व पूर्ण वृत्त आदि जिले की कार्यवाही पंजिका (रजिस्टर) में लिखना।
- सभी शारीरिक प्रमुखों के शाखा केन्द्र पर वार्षिकोत्सव अवश्य हो।
- शाखा के वार्षिकोत्सव में शाखा के ही घोष वादक हो।
- वर्ष में 1 बार सभी खण्डों व जिला केन्द्रों का पथ संचलन होवे व इसमें घोष वादक भी स्थानीय रहे।
- नगरीय क्षेत्र में साप्ताहिक शारीरिक वर्ग अपेक्षित व खण्ड में पाक्षिक/मासिक अभ्यास वर्ग अपेक्षित।
- वर्ष में एक बार शारीरिक गुणवत्ता का कार्यक्रम प्रत्येक स्तर पर हो।
- सभी जिलों की शारीरिक विभाग की कार्यवाही पंजिका बने।
- **अन्य आग्रह के बिन्दु-** आचार विभाग का पालन करवाना।
  - शाखा टोली का प्रशिक्षण वर्ग वर्ष में कम से कम 1 बार 24 घंटे का अपेक्षित।
  - जिला शारीरिक टोली सक्रिय व सक्षम हों इस हेतु विभाग व प्रान्त स्तर पर कोई न कोई उपक्रम हो।
  - शारीरिक विभाग का वार्षिक वृत्त शारीरिक विभाग के ही कार्यकर्ताओं द्वारा प्रत्यक्ष शाखा पर प्रवास करके भेजना अपेक्षित है, अर्थात् आँखों देखी शाखा का वृत्त संकलित करना।
- वर्तमान अनिवार्य कार्यक्रम-
  - 1. प्रतिदिन 1 मिनट दण्ड प्रहार।
  - 2. प्रतिदिन 5 मिनट संचलन अभ्यास।
  - 3. प्रतिदिन 5 मिनट दीर्घश्वसन (केवल प्रौढ़ शाखाओं में)

# सूर्य नमस्कार

सरल उपासना और सौम्य, सन्तुलित व्यायाम, यह सूर्यनमस्कार की विशेषता है। सूर्य नमस्कार नामक यह व्यायाम सात आसनों का समुच्चय भी है। ये आसन हैं-

1. ताड़ासन
2. उत्तानासन
3. अश्वचालन आसन/एकपाद प्रसरण आसन
4. दण्डासन/चतुंरगदण्डासन
5. सांष्टांगप्रणामासन
6. भुजंगासन
7. अधोमुखश्वान आसन

उनके पारम्परिक नाम, मंत्र, नियत, श्वसन एवं परिष्कृत हलचल के साथ सूर्यनमस्कार लगाने से प्रदीर्घ आयु, आरोग्य का मानो आश्वासन ही मिलता है।

**:: सुभाषित ::**

**ध्येयः सदा सवितृ-मण्डल-मध्यवर्ती ,**
**नारायणः सरसिजाऽसन सन्निविष्टः ।**
**केयूरवान् मकर-कुण्डलवान् किरीटि् ,**
**हारी हिरण्यमय वपुर्धृत शंख-चक्रः ॥**

सौर-मण्डल के मध्य में, कमल के आसन पर विराजमान (सूर्य) नारायण जो बाजूबंद, मकर की आकृति के कुण्डल, मुकुट शंख, चक्र धारण किये हुए तथा स्वर्ण आभायुक्त शरीर वाले हैं, का सदैव ध्यान करते है।

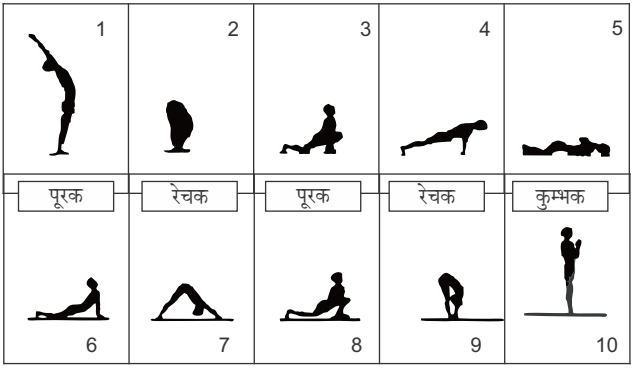


## मंत्र एवं उनका अर्थ

| | |
|---|---|
| ॐ मित्राय नमः | हित करने वाला मित्र |
| ॐ रवये नमः | शब्द का उत्पत्ति स्रोत |
| ॐ सूर्याय नमः | उत्पादक, संचालक |
| ॐ भानवे नमः | ओज, तेज |
| ॐ खगाय नमः | आकाश में विचरण करने वाला |
| ॐ पूष्णे नमः | पुष्टि देने वाला |
| ॐ हिरण्यगर्भाय नम | बलदायक |
| ॐ मरीचये नमः | व्याधिहारक/किरणों से युक्त |
| ॐ आदित्याय नमः | सूर्य |
| ॐ सवित्र नमः | सृष्टि उत्पादनकर्ता |
| ॐ अर्काय नमः | पूजनीय |
| ॐ भास्कराय नमः | कीर्तिदायक |
| ॐ श्री सवितृ सूर्यनारायणाय नमः | सृष्टि का उत्पादन और संचालन करने वाले नारायण सूर्य |

## फलश्रुति मंत्र

**आदित्यस्य नमस्कारान्, ये कुर्वन्ति दिने-दिने ।**
**आयुः प्रज्ञा बलम् वीर्यम् तेजस् तेषाञ् च जायते ॥**

## कदमों का अन्तर

| | | |
|---|---|---|
| प्रचल | - | एक कदम 75 से.मी |
| क्षिप्रचल | - | 100 से.मी. |
| मंदचल | - | 75 से.मी. |
| दीर्घपद | - | 85 से.मी. |
| ह्रस्वपद | - | 50 से.मी. |
| पार्श्वपद | - | 37.5 से.मी. |
| पुरसर | - | 75 से.मी. |
| प्रतिसर | - | 75 से.मी. |
| दक्षिण वामसर | - | 37.5 से.मी. |

## एक घण्टे की शाखा कार्यक्रम

| | |
|---|---|
| सम्पत्, ध्वजारोहण | ३ मिनट |
| दण्ड प्रहार (अनिवार्य) | २ मिनट |
| सूर्य नमस्कार मंत्र सहित (अनिवार्य) | ५ मिनट |
| समता व संचलन (अनिवार्य) | ५ मिनट |
| खेल | २० मिनट |
| वैकल्पिक कार्यक्रम | १० मिनट |
| बौद्धिक कार्यक्रम (गणगीत, बोधकथा/ प्रेरक प्रसंग/अमृत वचन/सुभाषित) | १० मिनट |
| विकिर व प्रार्थना, सूचनाएं आदि | ५ मिनट |

# प्रमुख आज्ञाएं व उनका अर्थ

शाखा, मिलन, मण्डली व कार्यक्रमों/बैठकों में उपयोग में आने वाली कुछ प्रमुख आज्ञाएं व उनका अर्थ निम्न प्रकार है-

| आज्ञा | | अर्थ |
|---|---|---|
| 1. प्रचल | - | चलना |
| 2. क्षिप्र चल | - | दौड़ना |
| 3. स्तभः | - | रुकना |
| 4. उपविश | - | बैठना |
| 5. उत्तिष्ठ | - | उठना/खड़े होना |
| 6. कुरु | - | प्रारम्भ करना |
| 7. प्रतिसर | - | पीछे हटना |
| 8. पुरसर | - | आगे बढ़ना |
| 9. दक्षिणसर | - | दायीं ओर हटना |
| 10. वामसर | - | बायीं ओर हटना |
| 11. दक्षिणवृत्त | - | दायें मुड़ना |
| 12. वामवृत्त | - | बायें मुड़ना |
| 13. अर्द्धवृत्त | - | पीछे मुड़ना |
| 14. विश्रम | - | पूर्व रचना समाप्त करना |

## गति

प्रचल- एक मिनट में 120 कदम
अर्थात 120 कदम × 75 से.मी. = 90 मी
क्षिप्रचल- 180 कदम 180× 100 से.मी. = 180 मी
मंदचल- 60 कदम 60× 75 से.मी. = 45 मी

## खेल : बाल स्वयंसेवकों के लिए

| क्र. | स्पर्श | मंडल | दो दल | सर्वश्रेष्ठ कौन | बुद्धि |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | गणेश छू | खो- विविध प्र. | डमरु दौड़ | लंगड़ी दौड़ | अंगारा |
| २. | बिगड़ा बैल | शिव राणा बंदा | कैदी बनाना | मेढ़क दौड़ | करेंट |
| ३. | मरखनी गाय | सर्प गति नमस्ते | रुमाल झपटा | एड़ी दौड़ | संख्या चक्र १ |
| ४. | जय हनुमान | नमस्ते भैया | जय हो विजय हो | हनुमान दौड़ | संख्या चक्र २ |
| ५. | मुरादाबादी लोटा | सुदर्शन चक्र | संख्या बनाओ | बिच्छू दौड़ | फलों की खोज |
| ६. | बन्धे हाथ | घर बचाओ | रूमाल झपट्टा | मगरमच्छ दौड़ | महापुरुष पहचानों |
| ७. | साँप नेवला | नीर, तीर, क्षीर | रेलगाड़ी प्र. १ | मुर्गा दौड़ | नेता की खोज |
| ८. | मैं उपस्थित | वन्दे मातरम् | रेलगाड़ी प्र. २ | बन्दर दौड़ | महापुरुष खोज |
| ९. | दुमकटा | शतरंज | प्रथम कौन स्पर्धा | घुड़सवार | खायेंगे |
| १०. | बम फटा | कुरु मूर्ति | लंगड़ों की बारात | हाथी दौड़ | उल्टी गिनती |
| ११. | अंग छू | चूहा-बिल्ली | लहर दौड़ | टिडढा दौड़ | आकाश-पृथ्वी पाताल |
| १२. | गेंद नेवला | शेर-बकरी | खजाना | ढेला दौड़ | पूसी म्याऊं |
| १३. | संगठन की श्रृंखला | खो-खो | पति-पत्नी | राक्षस दौड़ | आँख-कान सम्मेलन |
| १४. | विमान छू | नकलची बंदर | राम राजा रावण | मित्र दौड़ | ऐसा करो वैसा करो |
| १५. | सहायता | कटघरा | शक्ति परिचय | माखन चोर | डाकघर |

### अभ्यास वर्ग

1. निश्चित सूची - गण शिक्षक व ऊपर के सभी कार्यकर्ता तथा प्रशिक्षित बन्धु
2. निश्चित समय - मौसम व स्थान के अनुसार
3. निश्चित स्थान - नगरीय अभ्यास वर्ग का स्थान वर्ष भर बदलना नहीं।
4. निश्चित वेश - नेकर, दण्ड आवश्यक।
5. निश्चित कार्यक्रम - पूर्व निर्धारित करना चाहिये।

## तरुणों के लिए

| क्र. | स्पर्धा द्वंद्व | स्पर्श | दो दल | मंडल |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मगरमच्छ दौड़ | विष अमृत | चील झपट्टा | खो-विविध प्रकार |
| 2. | बिच्छू दौड़ | संगठन शृंखला | टैंक युद्ध | सुदर्शन चक्र |
| 3. | एड़ी दौड़ | संगठन दंड शृंखला | गुरु चेला | शेर-बकरी |
| 4. | गौरय्या | हिन्दू बनाना | ताला चाबी | चंदन/चुनौती |
| 5. | भालू दौड़ | दुमकटा | बजरंग दौड़ | पिंजरा/कटघर |
| 6. | कुक्कुट युद्ध | नदी विजय | दण्ड दौड़ | चक्रव्यूह |
| 7. | गौरय्या युद्ध | भस्मासुर | रेलगाड़ी प्र.1 | चल भैय्या |
| 8. | ग्रीवा | पदमासुर | रेलगाड़ी प्र. 2 | राणा शिवा बंदा |
| 9. | रथ युद्ध | तुम शिवाजी | खजाना | अग्नि कुण्ड |
| 10. | स्कन्ध | सिंह सुरक्षा | पति-पत्नी | मेवाड़ी विजय प्र.1 |
| 11. | घुड़सवार | जय हनुमान | रबड़ चक्र स्पर्धा | अखण्ड जंजीर |
| 12. | टैंक युद्ध | माफ करो | दण्ड गोल | कबड्डी के विविध प्र. |
| 13. | धक्का-मुक्की | मुरादाबादी लोटा | पुनर्मिलन | मत चूको चौहान |
| 14. | शक्ति परिचय 1 | विमान छू | शक्ति परिचय | मण्डल खो-खो |
| 15. | शक्ति परिचय 2 | पद्मासुर | समूह दौड़ | खो-पो |

## प्रौढ़ स्वयंसेवकों के लिए

| क्र. | मंडल | दो दल | बौद्धिक खेल |
|---|---|---|---|
| 1. | खो | संख्या बनाना | माखन चोर |
| 2. | वन्दे मातरम् प्र.1,2, | कैदी बनाना | महापुरुषों की खोज |
| 3. | नमस्ते भैया | डमरु चाल | लोटा-लंगोटा-सोटा |
| 4. | शतरंज | राम राजा रावण | संख्या चक्र |
| 5. | नीर, तीर, क्षीर | अंक कबड्डी | सूर्य नमस्कार मंत्र |
| 6. | सर्प गति नमस्ते | पुनर्जन्म कबड्डी | प्रार्थना प्रतियोगिता |
| 7. | ओवर टेक | रुमाल झपट्टा | विलोम/समानार्थी शब्द |
| 8. | गांधी,आजाद,अंबेडकर | शेर-आदमी-बंदूक | हंसी के गोल-गप्पे |

## *सीटी के संकेत*

सभी मुख्य शिक्षक तथा गण शिक्षक शाखा पर सीटी का उपयोग करें। यह अपेक्षा है।

**संकेतः लम्बी सीटी – छोटी सीटी 0**

शाखा प्रारम्भ करने हेतु —0 —0

शाखा विकिर करते समय अग्रेसर — 0 0 0

शाखा विकिर करते समय संघ सम्पत् — 0 0

प्रार्थना 0

संघचालक जी के आगमन पर ——

पूर्ववत 0000

(संघचालक जी के मध्य में जाने पर भी ऐसा ही संकेत होगा।)

कार्यक्रम परिवर्तन हेतु — 0

शाखा के बीच में किसी भी कारण से दक्ष एवं ध्वजाभिमुख कराने हेतु ——

खतरे के संकेत ——————

विशेष : सूर्य नमस्कार, व्यायाम योग, खेल, प्रहार आदि कार्यक्रम भी सीटी के संकेत से सुविधापूर्वक कराये जा सकते हैं।

# शाखा लगाते एवं विकिर करते समय की आज्ञायें

सीटी संकेत —0—0 (1 लम्बी 1 छोटी,1 लम्बी 1 छोटी)

| | |
|---|---|
| 1. संघ दक्ष | 2. आरम् |
| 3. अग्रेसर | 4. अग्रेसर सम्यक् |
| 5. आरम् | 6. संघ सम्पत् |
| 7. संघ दक्ष | 8. संघ सम्यक् |
| 9. अग्रेसर अर्द्धवृत | 10. संघ आरम् |
| 11. संघ दक्ष (ध्वज लगेगा) | 12. ध्वज प्रणाम 1, 2, 3 |
| 13. संख्या | 14. आरम् |
| 15. संघ दक्ष | 16. आरम् |
| 17. संघ दक्ष | 18. स्वस्थान |

---

1. अग्रेसर हेतु सीटी संकेत — 000 (1 लम्बी 3 छोटी)

| | |
|---|---|
| 2. अग्रेसर सम्यक् | 3. आरम् |

4. सम्पत् हेतु सीटी संकेत — 00 (1 लम्बी 2 छोटी)

| | |
|---|---|
| 5. संघ दक्ष | 6. संघ सम्यक् |
| 7. अग्रेसर अर्द्धवृत | 8. संख्या |
| 9. आरम् | 10. संघ दक्ष |
| 11. आरम् | 12. संघ दक्ष |

13. प्रार्थना हेतु सीटी संकेत 0 (1 छोटी)

| | |
|---|---|
| 14. ध्वज प्रणाम 1, 2, 3 | 15. संघ विकिर |

आलोक : शाखा पर यदि संख्या कम है तो संख्या देते समय दौड़कर जाना-आना अनिवार्य नहीं है।

# व्यायाम योग

**योग - 1**

1. बायां पैर बायीं ओर दोनों हाथ कान से सटे हुए ऊपर हथेलियाँ एक दूसरे के सामने।
2. कमर से बायीं ओर झुकना।
3. कमर सीधी एक की स्थिति।
4. योग स्थिति।

**योग- 2**

1. बांया पैर बायीं ओर बाजू में खोलना हथेलियाँ जमीन की ओर।
2. एड़ियों से बायीं ओर घूमना हाथ नमस्कार की स्थिति में अंगूठे सूर्यचक्र पर।
3. एक की स्थिति।
4. योग स्थिति।

**योग - 3**

1. बांया पैर आगे दोनों हाथ सीने के सामने।
2. आगे वाले पैर पर दबना दोनों हाथ बाजू में।
3. एक की स्थिति।
4. बायां पैर दायें पैर से मिलाकर योग स्थिति, उपरोक्त कार्य दायं पैर से करना (5,6,7,8)

**योग - 4**

1. बायां पैर बायीं ओर दोनों हाथ बाजू में जमीन के समानान्तर हथेली जमीन की ओर।
2. दायां पैर बायें से मिलाना ऊपर ताली।
3. वापस योग स्थिति में आना। 4. यही कार्य दायें पैर से करना।

## जुलाई गणगीत

**स्वयं अब जागकर हमको, जगाना देश है अपना ।।**
**जगाना देश है अपना..... जगाना देश है अपना।।**

हमारे देश की मिट्टी, हमें प्राणों से प्यारी है,
यहीं के अन्न, जल, वायु, परम श्रद्धा हमारी है ।
स्वभाषा है हमें प्यारी, औ प्यारा देश है अपना ।।१।।
जगाना देश है अपना...।।

नहीं है अब समय कोई, गहन निद्रा में सोने का,
समय है एक होने का, न मतभेदों में खोने का ।
बढ़े बल राष्ट्र का जिससे, वो करना मेल है अपना ।।२।।
जगाना देश है अपना...।।

जतन हो संगठित हिन्दू, औ सक्रिय भाव भरने का,
जगाने राष्ट्र की भक्ति, उत्तम कार्य करने का ।
समुन्नत राष्ट्र हो भारत, यही उद्देश्य है अपना।।३।।
जगाना देश है अपना...।।

## अगस्त गणगीत

**दिव्य साधना राष्ट्रदेव की, खिले सुगन्धित हृदय सुमन।**
**ध्येय एक ही माँ भारत की, गूँजे जय-जय विश्व गगन।**
शाखा रूपी नूतन मंदिर, धन्य-धन्य अपना जीवन।
एकनिष्ठ हो ढाल रहा है, शुभ संस्कारित तन और मन।
स्नेहमयी अनुपम तप धारा, ज्ञान सुधा पा सभी मगन।।१।। ध्येय ...
कहाँ थे साधन कहाँ थी सुविधा, संकट में भी सदा बढ़े।
संकल्पित मन, कर्म, तपस्या, से ही साधक शिखर चढ़े।

स्वाभिमान से विचरें जग में, देख सभी में अपनापन।।२।। ध्येय..
नये-नये शुभ परिवर्तन को, अन्तर्मन से स्वीकारें।
कैसी भी हो कठिन चुनौती, हिम्मत अपनी न हारें।
हमने वह क्षमता पाई है, वैभव स्वयं करे वंदन।।३।। ध्येय..
अटल अडिग है निश्चय अपना, ध्येय सुपथ न छोड़ेंगे।
नवयुग के हम बनें भगीरथ, गंगधार भी मोड़ेंगे।
मंगलमय सुन्दर रचना हो, रात-दिवस बस यही लगन।।४।। ध्येय..

## सितम्बर गणगीत

चरैवेति चरैवेति
यही तो मन्त्र है अपना, नहीं रुकना नहीं थकना
सतत् चलना सतत् चलना, यही तो मन्त्र है अपना।।ध्रु।।
शुभंकर मन्त्र है अपना।
हमारी प्रेरणा भास्कर है, जिनका रथ सतत् चलता,
युगों से कार्यरत है जो सनातन है प्रबल उर्जा,
गति मेरा धरम है जो भ्रमण करना भ्रमण करना,
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना।।1।।
हमारी प्रेरणा माधव हैं जिनके मार्ग पर चलना,
सभी हिन्दू सहोदर है ये जन जन को सभी कहना,
स्मरण उनका करेंगे और समय दे अधिक जीवन का,
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना।।2।।
हमारी प्रेरणा भारत है भूमि की करें पूजा,
सुजला सुफ़ला सदा स्नेहा यही तो रूप है उसका,
जियें माता के कारण हम करें, जीवन सफ़ल अपना
यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना।।3।।

## जुलाई-2018, आषाढ़ एवं श्रावण वि. सं.2075 युगाब्द 5120

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रविवार Sunday | 1 आषाढ़ कृष्ण तृतीया | 8 दशमी | 15 तृतीया | 22 दशमी | 29 द्वितीया |
| सोमवार Monday | 2 चतुर्थी | 9 एकादशी | 16 चतुर्थी | 23 एकादशी | 30 तृतीया |
| मंगलवार Tuesday | 3 पंचमी | 10 द्वादशी | 17 पंचमी | 24 द्वादसी | 31 तृतीया |
| बुधवार Wednesday | 4 षष्ठी | 11 त्रयोदशी | 18 षष्ठी | 25 त्रयोदशी | |
| गुरुवार Thusday | 5 सप्तमी | 12 चतुर्दशी | 19 सप्तमी | 26 चतुर्दशी | |
| शुक्रवार Friday | 6 अष्टमी | 13 अमावस्या | 20 अष्टमी | 27 पूर्णिमा | |
| शनिवार Saturday | 7 नवमी | 14 आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा | 21 नवमी | 28 श्रावण कृष्ण प्रतिपदा | |

## अगस्त-2018, श्रावण एवं भाद्रपद वि. सं.2075 युगाब्द 5120

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रविवार Sunday | | 5 अष्टमी | 12 श्रावण शुक्ल प्रतिपदा | 19 नवमी | 26 पूर्णिमा |
| सोमवार Monday | | 6 दशमी | 13 द्वितीया | 20 नवमी | 27 भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा |
| मंगलवार Tuesday | | 7 एकादशी | 14 तृतीया | 21 दशमी | 28 द्वितीया |
| बुधवार Wednesday | 1 चतुर्थी | 8 द्वादशी | 15 चतुर्थी | 22 एकादशी | 29 तृतीया |
| गुरुवार Thusday | 2 पंचमी | 9 त्रयोदशी | 16 पंचमी | 23 द्वादसी | 30 चतुर्थी |
| शुक्रवार Friday | 3 षष्ठी | 10 चतुर्दशी | 17 सप्तमी | 24 त्रयोदशी | 31 पंचमी |
| शनिवार Saturday | 4 सप्तमी | 11 अमावस्या | 18 अष्टमी | 25 चतुर्दशी | |

# सितम्बर - 2018

## भाद्रपद एवं आश्विन वि.सं.2075 युगाब्द 5120

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रविवार Sunday | 30 पंचमी | 2 सप्तमी | 9 अमावस्या | 16 सप्तमी | 23 चतुर्दशी |
| सोमवार Monday | | 3 अष्टमी | 10 भाद्रपद शु. प्रतिपदा | 17 अष्टमी | 24 चतुर्दशी |
| मंगलवार Tuesday | | 4 नवमी | 11 द्वितीया | 18 नवमी | 25 पूर्णिमा |
| बुधवार Wednesday | | 5 दशमी | 12 तृतीया | 19 दशमी | 26 आश्विन कृ. प्रतिपदा |
| गुरुवार Thusday | | 6 एकादशी | 13 चतुर्थी | 20 एकादशी | 27 द्वितीया |
| शुक्रवार Friday | | 7 द्वादसी | 14 पंचमी | 21 द्वादसी | 28 तृतीया |
| शनिवार Saturday | 1 षष्ठी | 8 चतुर्दशी | 15 षष्ठी | 22 त्रयोदशी | 29 चतुर्थी |

## शाखा

संघ की शाखा खेल खेलने अथवा कवायद (परेड) करने का स्थान मात्र नहीं है, अपितु सज्जनों की सुरक्षा का बिन बोले अभिवचन है, तरुणों को अनिष्ट व्यसनों से मुक्त रखने वाला संस्कार पीठ है, समाज पर अकस्मात आने वाली विपत्तियों अथवा संकटों में त्वरित, निरपेक्ष सहायता मिलने का आशा केन्द्र है, महिलाओं की निर्भयता एवं सभ्य आचरण का आश्वासन है, दुष्ट तथा देशद्रोही शक्तियों पर अपनी धाक स्थापित करने वाली शक्ति है और सबसे प्रमुख बात यह है कि समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुयोग्य कार्यकर्ता उपलब्ध कराने हेतु योग्य प्रशिक्षण देने वाला विद्यापीठ है। **-मा. बालासाहेब देवरस**


:: प्रान्त कार्यालय ::

**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मेरठ प्रान्त**

शंकर आश्रम, शिवाजी मार्ग, मेरठ